तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 6-7, मई-जून 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

टैब थमा कर हाथ में, दिया गज़ब वरदान
हरियाणा में है हुआ, अब अधिगम आसान

अब गुरुजन के साथ में, टैब भी विद्यमान

अब गुरुजन के साथ में, टैब भी विद्यमान ।
जब चाहे पढ़ लीजिए, अहर्निश मिले ज्ञान ।।

गीता के उपदेश से, हम जग के सिरमौर ।
टैब योजना से सुनो, फिर लौटे वह दौर ।।

हरियाणा में है मिटा, आज गरीबी दोष ।
हर बालक के हाथ में, दिया ज्ञान का कोश ।।

तकनीकी इस दौर के, बने सारथी चार ।
गुरु-शिष्य सह टैब है, और साथ सरकार ।।

विश्व गुरु की राह पर, चला हमारा देश ।
टैब सुसज्जित हो गया, धरा मनोहर वेश ।।

विश्व अजूबा बन गया, रच डाला इतिहास ।
दो जीबी डाटा दिया, और टैब भी खास ।।

पाठ्यक्रम से लैस कर, रची गज़ब की चीज ।
हर बालक में बो दिया, ज्ञान गुणों का बीज ।।

दो जीबी डाटा दिया, बड़ा किया उपकार ।
हर बालक है कह रहा, जय हो! हे सरकार ।।

नहीं हमें अब खौफ है, नहीं रहे लाचार ।
खूब पढ़ेंगे टैब से, गुरु करेंगे पार ।।

टैब नाम पुड़िया बना, ज्ञान किया है बंद ।
नहीं किसी भी हाल में, शिक्षण होगा मंद ।।

पाँच लाख को दे दिया, पाल नाम हथियार ।
डिजिटल हो इंडिया, सपना हो साकार ।।

हर पल गुरुवर साथ से, बढ़े सभी का नूर ।
जब चाहे बच्चे करें, अब शंका को दूर ।।

श्रीभगवान बव्वा
प्रवक्ता अंग्रेज़ी
रावमा विद्यालय लुखी
ज़िला-रेवाड़ी, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मई-जून 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

विवेक कालिया
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-II)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जहाँ तक दिखाई देता है वहाँ तक जाइये, वहाँ पहुँचने पर आगे भी दिखाई देगा।"

- ई-अधिगम' योजना शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात 5
- ई-अधिगम योजना शिक्षा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी: डॉ महावीर सिंह 8
- विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य 9
- सपनों को पंख लगाती निःशुल्क टैबलेट योजना 12
- भारत व हरियाणा के इतिहास से जुड़ेंगे विद्यार्थी 16
- लर्निंग गैप पूरा करेगा प्रोजेक्ट 'उड़ान' 17
- प्रार्थना सभा को बनाएँ रोचक, प्रेरक और अनुशासित 18
- शिक्षा एवं सुसंस्कारों का अनूठा संगम भिवानी का गिगनाऊ विद्यालय 20
- खेल-खेल में विज्ञान 24
- गज़ब की नृत्यांगना है छात्रा अन्नू 28
- रचनात्मक शैली की धनी हैं ज्योति 29
- सदन प्रक्रिया: प्रारूप एवं क्रियान्वयन 30
- सिर्फ दो गिलास पानी 31
- The bacteria in your gut may reveal your true age 32
- The CRISPR Technology ... 34
- Let's Invest in Our Planet 36
- Why Learn Algebra 38
- Where to Go, What to Choose? 39
- Our Best Companion 40
- Articles Through Poem 41
- The Novel Corona and its Impact on.. 42
- I'm a Teacher and I know my Students 44
- Harbans Puzzle 45
- Amazing Facts 48
- General Knowledge Quiz 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

कोरोना के काल से, लिया सबक यह खास टैब योजना ने यहाँ, भर दी गज़ब उजास

बदलते युग के साथ-साथ शिक्षा में भी नित नये-नये बदलाव देखने को मिलते हैं। नई तकनीक के दखल से शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। तख्ती, स्लेट, टैक्स्ट बुक, चॉक व टॉक से शिक्षा काफी आगे बढ़ गई है। अचानक कोरोना के आने से तो शिक्षण का तरीका एकदम से बदलना पड़ा। शिक्षण के क्षेत्र में जो गैजेट 'सुविधा' के तौर पर देखे जाते थे, रातों-रात वे 'आवश्यकता' बन गए। हरियाणा ने कोरोना की चुनौती का डट कर सामना किया। आपदा में अवसर ढूँढ़ निकाले। प्रदेश में 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' बेहद सफलता के साथ चलाया गया। अध्यापक और बच्चे का संपर्क जोड़ने के लिए व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए। सभी जानते हैं कि इसके लिए एंड्रॉयड फोन की जरूरत थी। बहुत से परिवार ऐसे थे जिनके पास एंड्रॉयड फोन नहीं था, था तो परिवार में केवल एक, जबकि पढ़ने वाले भाई-बहन दो या तीन। ऐसा भी देखा गया कि परिवार का मुखिया घर के इकलौते फोन को अपने साथ ले जाता था और काम से देर शाम को घर लौटता था। माननीय मुख्यमंत्री महोदय दूरगामी सोच के धनी हैं। उन्होंने विचार-विमर्श किया कि क्यों न ऐसा कोई गैजेट सरकार की ओर से विद्यार्थियों को मुहैया कराया जाए कि विद्यार्थी टैक्स्ट बुक के साथ-साथ डिजिटल सामग्री का भी उपयोग कर सके। सोचना सरल कार्य हो सकता है, लेकिन उस सोच को धरातल पर उतारना और उसे मूर्त रूप देना सरल नहीं होता। लेकिन माननीय मुख्यमंत्री महोदय की प्रेरणा से, माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के नेतृत्व में विभाग के कुशल प्रशासनिक अधिकारियों की मेहनत से 5 मई, 2022 को प्रदेश भर के विद्यार्थियों को 5 लाख टैबलेट देने की महत्त्वाकांक्षी ई-अधिगम योजना लॉन्च करके हरियाणा ने इतिहास रच दिया है। यह प्रदेश सरकार की वह योजना है जिसके बारे में विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह यह उम्मीद जाहिर कर रहे हैं कि यह योजना शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। 'शिक्षा सारथी' का प्रस्तुत अंक इसी महत्त्वाकांक्षी योजना को समर्पित है। आपके अमूल्य विचारों व प्रतिक्रियाओं की सदा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

-संपादक

ई-अधिगम' योजना शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात

टैबलेट के रूप में जन्मदिवस पर विद्यार्थियों को मुख्यमंत्री जी ने दिया अनूठा उपहार

डॉ. प्रदीप राठौर

देश भर के लिए एक मिसाल कायम करते हुए हरियाणा ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का आगाज़ कर दिया। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने बीते दिनों रोहतक से 'ई-अधिगम' योजना का शुभारंभ करते हुए सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित कर इस क्रांति का सूत्रपात किया। राज्य के 119 स्थानों में भी यह टैबलेट वितरण समारोह आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री इस दौरान प्रदेश के सभी जिलों से वर्चुअल माध्यम से जुड़े और बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों से संवाद भी किया। इस ऐतिहासिक अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूलों के छात्रों को पहले पुस्तकों को बैग में भरकर लाना पड़ता था, लेकिन अब इस टैब में ही उनकी किताबें आएँगी। उन्होंने कहा कि कोरोना ने स्वास्थ्य के बाद शिक्षा को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में तकनीक को अपनाकर शिक्षा देने की योजना को देश भर में लागू करने के लिए वर्ष 2030 तक का लक्ष्य रखा गया है, जबकि हम 2025 तक इसे लागू करने को लेकर संकल्पित हैं।

हरियाणा प्रदेश में एक बहुत बड़ी क्रांति की शुरुआत हो रही है। आज तक सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए देश के किसी और प्रदेश में इतना बड़ा अभियान नहीं चला। देश के किसी भी राज्य ने एक साथ 5 लाख बच्चों को टैबलेट वितरित नहीं किए। हरियाणा ऐसा पहला राज्य है। सरकार 9वीं से 12वीं के बच्चों को टैबलेट दे रही है। अपने संबोधन में मुख्यमंत्री जी ने कहा कि एक समय था जब स्कूल में जाने के लिए पुस्तकों के साथ तख्ती पर लिखा करते थे, लेकिन आज उस तख्ती की जगह टैबलेट ने ले ली है। अब बच्चे इसपर अभ्यास करेंगे।

रोज़गारोन्मुखी होगी शिक्षाः मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि कौशल विकास योजना को आईटी के तहत बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। इसके तहत प्रदेश में 50 स्टैम लैब स्थापित की जाएँगी। इनमें आईटी की स्किलिंग करवाई जाएगी। इसमें 3-डी प्रिंटिंग, ड्रोन तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी, वर्चुअल रियल्टी आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि हमारे विद्यार्थी आगे बढ़ें। गेम डेवलेपर, क्लाउड कम्प्यूटिंग में बच्चों को दक्ष बनाएँगे। अगर इन सभी कलाओं में हरियाणा का युवा प्रशिक्षित होगा तो विश्वभर में कहीं पर भी जाकर रोज़गार प्राप्त कर पाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि फिजिक्स और गणित में विद्यार्थी प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन करें, इसके लिए ओलंपियाड शुरू किया जाएगा। जो विद्यार्थी ऐसी प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करेंगे उन्हें नासा और इसरो में भेजा जाएगा। जिला और राज्य स्तर पर विषय अनुसार ओलंपियाड आयोजित किए जाएँगे, इनके विजेताओं को छात्रवृत्ति भी दी जाएगी।

ई-अधिगम योजना शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। आने वाले समय में शिक्षा क्षेत्र में और भी कई सुधार किए जाएँगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड के कारण शिक्षा क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा और स्कूल बंद करने पड़े, लेकिन अब टैबलेट नया क्लासरूम बन गया है। और ई-बुक्स के माध्यम से तो यह फुल फ्लेज्ड क्लास रूम ही बन गया है।

बजट का सबसे ज्यादा हिस्सा शिक्षा क्षेत्र के लिए-

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा अपने बजट का सबसे ज्यादा हिस्सा शिक्षा क्षेत्र पर खर्च करता है। उन्होंने बताया कि इस बार के बजट में अकेले 20 हजार करोड़ रुपए शिक्षा पर खर्च किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन किए जा रहे हैं, जिसके लिए बजट की कमी आड़े नहीं आने दी जाएगी।

सरकार टास्क फोर्स का करेगी गठन-

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर घोषणा करते हुए कहा कि शिक्षा क्षेत्र के लिए सरकार दो टास्क फोर्स बनाने जा रही है। एक टास्क फोर्स स्कूलों का इंफ्रास्ट्रक्चर, बिल्डिंग, चारदीवारी, सुंदरता, स्वच्छता, रास्ते, पानी और शौचालय सहित अन्य जरूरी आवश्यकताओं पर काम करेगी, तो दूसरी टास्क फोर्स स्कूलों में फर्नीचर आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक साल के अंदर हरियाणा के सभी स्कूलों में ड्यूल बेंच की व्यवस्था कर दी जाएगी।

आईटी के क्षेत्र से संबंधित कौशलों में बच्चों को किया जाएगा दक्ष-

मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों से आईटी के क्षेत्र में कौशल हासिल करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बच्चों की आईटी स्किल को निखारने की व्यवस्था सरकार द्वारा की जाएगी। बच्चों को 3-डी प्रिंटिंग, ड्रोन, एआई, ब्लॉक चेन सहित अन्य तकनीकों का कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। आईटी ट्रेंड युवक कहीं भी देश दुनिया में काम कर सकते हैं, उनके लिए रोजगार के रास्ते खुल जाते हैं। उन्होंने भरोसा जताया कि आने वाले समय में हरियाणा के युवा देश और दुनिया में पहली पसंद बन जाएँगे। उन्होंने कहा कि हरियाणा में अलग से फॉरेन कॉपरेशन विभाग बनाया गया है जिसके जरिए दूसरे देशों के साथ सीधा संपर्क कर वहाँ एक्सपोर्ट कर सकते हैं और मैनपावर भी भेज सकते हैं।

छात्रों के लिए विषयवार ओलंपियाड की शुरुआत-

मुख्यमंत्री ने कहा कि फिजिक्स और गणित के विद्यार्थियों में अच्छी प्रतियोगिता हो, इसके लिए छात्रों के लिए विषयवार ओलंपियाड शुरू किया जाएगा। इसमें अच्छे अंक लाने वाले बच्चों को नासा और इसरो जैसी संस्थाओं में भेजा जाएगा। जिला और राज्य स्तर पर ओलंपियाड होंगे, इनमें शामिल विद्यार्थियों को छात्रवृति और पुरस्कार भी दिये जाएँगे।

युवाओं को एनडीए लेवल की तैयारी करवाई जाएगी-

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय सेना में 10 फीसदी हरियाणा के युवा हैं। लेकिन सेना में हरियाणा के अफसरों की संख्या काफी कम है। अब हम इसमें आगे बढ़ रहे हैं और युवाओं को एनडीए लेवल की तैयारी करवाई जाएगी। एनडीए की कोचिंग के लिए विशेष प्रबंध किए जाएँगे।

इंजीनियरिंग और लॉ की पढ़ाई हिंदी में भी-

कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत इंजीनियरिंग और लॉ की पढ़ाई अगले वर्ष से हिंदी में भी होगी। विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार पाठ्यक्रम चुन सकेंगे। शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए 500 नए मॉडल संस्कृति स्कूल खोले जा रहे हैं। इसके अलावा 4 हजार

चरणबद्ध तरीके से कराई जा रही टैबलेट ट्रेनिंग

विभाग अपनी महत्त्वाकांक्षी योजना को सफल बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। टैबलेट के प्रशिक्षण का कार्य चरणबद्ध ढंग से चलाया जा रहा है। प्रथम चरण में मास्टर ट्रेनर तैयार किए गए। बाद में इन मास्टर ट्रेनरों द्वारा अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

अब विद्यार्थियों की ऑनलाइन पढ़ाई टैब से हो सकेगी। ऑनलाइन पढ़ाई पिछली बार की तरह व्हटसएप्प ग्रुप में काम भेजकर करने वाली न होकर टैब में मौजूद स्टूडैंट एप्प और टीचर एप्प से करवाई जा सकेगी। अब आवश्कता पड़ने पर ऑनलाइन क्लास पढ़ाई जा सकेगी, ऑनलाइन टेस्ट लिया जा सकेगा, ऑनलाइन ही होमवर्क दिया जा सकेगा। विद्यार्थियों को यदि कोई प्रश्न या शंका होगी तो वे ऑनलाइन पूछ सकेंगे और जब तक विषय-अध्यापक उसका जवाब ऑनलाइन नहीं दे देगा, तब तक वह ऑनलाइन डैशबोर्ड पर अध्यापक के स्तर पर पैंडिंग शो होता रहेगा।

प्रत्येक टीचर की व्यक्तिगत आईडी से उसका टैब मैप हो जाएगा और बीईओ, डीईओ, निदेशक महोदय तथा मुख्यमंत्री महोदय के कार्यालय तक टैब इस्तेमाल की सीधी रिपोर्ट ऑटोमैटिक रूप से मोबाइल डिवाइस मैनेजमैंट (एमडीएम) प्रणाली के माध्यम से पहुँच जाएगी। अध्यापक का स्थानांतरण होने पर भी उसका टैब पुराने स्कूल में जमा नहीं करवाया जाएगा, बल्कि नए स्कूल में भी वह अपना वही टैब साथ लेकर जाएगा। जल्द ही टीचर डायरी ऑनलाइन ही टैब से भरनी होगी, जो प्रिंसिपल के पास भी ऑनलाइन ही जाएगी, यानी टैबलेट शिक्षण व्यवस्था में क्रांति ले कर आया है।

प्ले-वे स्कूल भी खोले जा रहे हैं। कामकाजी महिलाओं के लिए क्रैच की व्यवस्था की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने किया विद्यार्थियों और अभिभावकों से सीधा संवाद-

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि विद्यार्थियों को दिए गए 5 लाख टेबलेट के लिए स्कूल मैनेजमेंट कमेटियों द्वारा विद्यालयों में चार्जिंग आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके लिए कमेटियाँ सोलर सिस्टम व अन्य आवश्यक उपकरणों का प्रबंध करें। मुख्यमंत्री रोहतक में टेबलेट वितरण समारोह के दौरान विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों से सीधा संवाद कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने फतेहाबाद के एक स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एसएमसी) के सदस्य श्री रोजी से बातचीत करते हुए कहा कि एसएमसी को टेबलेट चार्जिंग के लिए स्कूलों में आवश्यक प्रबंध करने चाहिए। उन्होंने पंचकूला की छात्रा शिवानी से भी वर्चुअली सीधा संवाद किया। शिवानी ने मुख्यमंत्री को जन्मदिन की बधाई दी और कहा कि इस टेबलेट से वह ऑनलाइन व ऑफलाइन पढ़ाई कर सकेगी और बोर्ड की परीक्षा देकर अच्छे कॉलेज में दाखिला ले सकेगी। मुख्यमंत्री ने शिवानी से यह भी पूछा कि क्या उन्हें टेबलेट को चलाने के लिए किसी ट्रेनिंग की जरूरत है? तो शिवानी ने ट्रेनिंग के लिए हामी भरी। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके शिक्षकों को टेबलेट देने के साथ-साथ ट्रेनिंग भी दी जाएगी ताकि वे विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ ट्रेनिंग भी दे सकें।

करनाल की पीजीटी सुमनलता ने कहा कि आज तकनीक का युग है, मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को टेबलेट देकर बहुत ही अच्छा प्रयास किया है। इसके माध्यम से बच्चों के आकाश छूने का सपना साकार होगा और वे ग्लोबल स्टूडेंट बनेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि 33 हजार अध्यापकों को भी टेबलेट दिए जा रहे हैं। यमुनानगर से एक विद्यार्थी के अभिभावक श्री मोहम्मद समीम ने भी हरियाणा सरकार के इस कदम की सराहना की। मुख्यमंत्री ने उन्हें बताया कि टेबलेट के साथ-साथ विद्यार्थियों को 2 जीबी इंटरनेट डाटा भी मुफ्त दिया जा रहा है।

drpradeeprathore@gmail.com

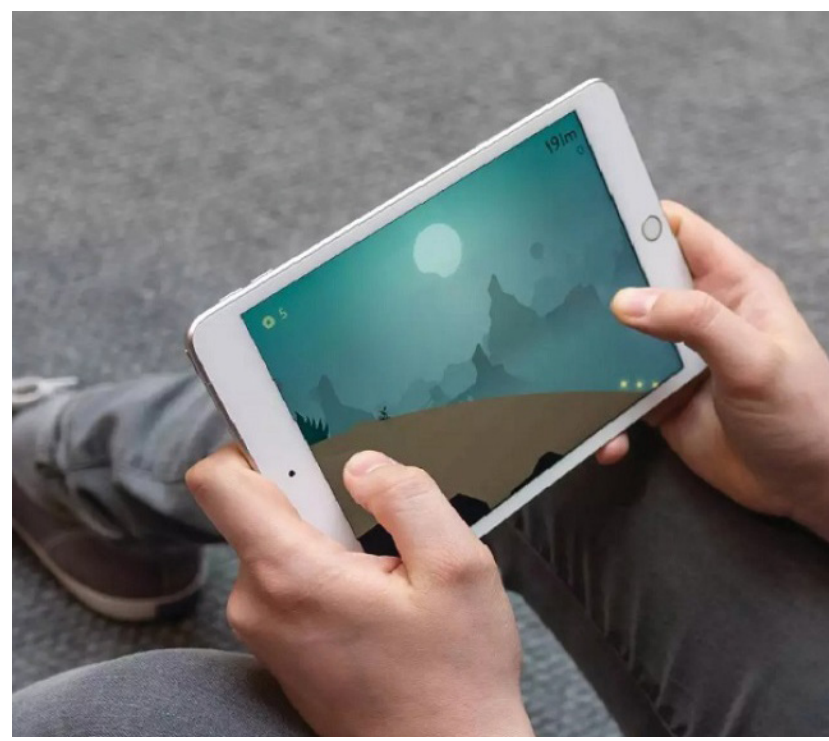

ई-अधिगम योजना शिक्षा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगीः डॉ महावीर सिंह

हरियाणावासी हर चुनौती को अवसर में बदल कर इतिहास बनाने के लिए जाने जाते हैं। अब एक और इतिहास रचा गया है। यह बात विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह बीते दिनों रोहतक में आयोजित राज्य स्तरीय टैबलेट वितरण समारोह में अपने संबोधन में कही।

उन्होंने कहा कि बीते दिनों शिक्षामंत्री महोदय की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधिमंडल स्कॉटलैंड और इंग्लैंड गया था। ई-अधिगम के तहत टैबलेट देने की बात जब वहाँ बताई गई तो इस तरह की व्यापक व विस्तारित योजना के बारे में जानकर वे लोग भी भौचक्के रह गये। इसलिए हरियाणा देश के सामने ही नहीं, विश्व के सामने भी इतिहास रच रहा है। इससे प्रदेश के बच्चे न केवल नई तकनीक से जुड़ेंगे, बल्कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार रहेंगे। यह बात मुख्यमंत्री जी के दृढ संकल्प को दर्शाती है कि इतने कम समय में इतनी बड़ी संख्या में प्रदेश के विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित किए जा रहे हैं।

उन्होंने जिक्र किया कि कोरोना-काल में जब अचानक शिक्षण संस्थाओं को बंद करना पड़ा था, उस वक्त भी प्रदेश में शिक्षण जारी रखने के यत्न प्रदेश में जी-जान से हुए हैं। 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा' कार्यक्रम प्रदेश में सुभीते से चला है। हम सभी जानते हैं कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चे आर्थिक रूप से साधारण परिवारों से संबंध रखते हैं, उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वे ऑनलाइन शिक्षण के लिए महँगे गैजेट खरीद लेते, इसलिए विभाग ने शिक्षण को एजुसैट के माध्यम से टैलीविजन के साथ जोड़ा। वहाँ यह समस्या थी कि संवाद एकतरफा हो पा रहा था। विद्यार्थी क्या सीख पा रहे हैं और कितना सीख पा रहे हैं, इसका पता लगाना कठिन था। हालांकि उस समय 'शंका समाधान' का कार्यक्रम भी हमने चलाया था, लेकिन उसमें भी अधिक सफलता नहीं मिल पाई थी। फिर माननीय मुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री के दिशानिर्देशन पर हमने ऐसी योजना के बारे में सोचना आरंभ किया कि सरकार की ओर से बच्चों को टैबलेट उपलब्ध कराया जाए। जब यह प्रस्ताव मुख्यमंत्री महोदय के सामने रखा गया तो उन्होंने हर्ष जाहिर करते हुए कहा कि बच्चों को जो भी उपकरण उपलब्ध कराया जाए उसकी क्वालिटी से कोई भी समझौता न किया जाए। वह सर्वोत्तम क्वालिटी का व सर्वोत्तम प्रणाली से सुसज्जित हो। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि बच्चों के माता-पिता गरीब हो सकते हैं, बच्चे नहीं। उनके अभिभावक की भूमिका में कार्य कर रही प्रदेश सरकार के होते हुए किसी प्रकार की हीनता का भाव राजकीय विद्यालयों के बच्चों के मन में नहीं आना चाहिए। टैबलेट का विचार बनने के बाद दिक्कत यह थी कि इसका सॉफ्टवेयर कैसा हो, यह कैसे सुनिश्चित हो कि इसका 'सदुपयोग' हो रहा है। इसके लिए भी गहन चिन्तन-मनन हुआ। माध्यमिक शिक्षा के महानिदेशक डॉ. जे. गणेशन के दिशा निर्देशन में इस दिशा में कार्य कर रही देश की नामी-गिरामी संस्थाओं से बातचीत की गई। ई-टैंडर के उपरांत 'पाल' नामक सॉफ्टवेयर को चुना गया।

उन्होंने कहा कि प्रथम चरण में दसवीं व बारहवीं कक्षा के छात्रों को टैबलेट दिए जा रहे हैं, दसवीं के नतीजे आने के बाद कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों को भी टैबलेट दिए जाने हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा व चिकित्सा मुख्यमंत्री महोदय की महत्त्वाकांक्षी प्राथमिकताएँ हैं, जिन पर वे बड़ी ही दरियादिली व उदारता से धनराशि खर्च कर रहे हैं। सबसे ज्यादा बजट शिक्षा विभाग को दिया गया है। इस योजना की सफलता के बारे में किसी के मन में कोई संदेह नहीं है। अध्यापक संगठनों ने भी प्रदेश सरकार के इस फैसले की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसके बारे में शिक्षकों को प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया गया है। शिक्षकों का उत्साह भी देखते ही बन रहा है।

-डॉ. प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

बच्चों ने जन्मदिन पर मुख्यमंत्री को भेंट किए तोहफे

बच्चों ने भी मुख्यमंत्री को उनके जन्मदिन पर उपहार भेंट किए। किसी ने अपने हाथ से बनाए पोस्टर, तो किसी ने पोस्ट कार्ड दिए। मुख्यमंत्री ने इन्हें स्वीकार करते हुए बच्चों के प्रयास को सराहा। उनके बीच जाकर फोटो खिंचवाया। कुछ बच्चों ने मुख्यमंत्री जी का पेंसिल से स्कैच बनाया था, जिन्हें देखकर यह लगता था कि काफी मेहनत व समय लगाकर बच्चों ने इन्हें तैयार किया है। मुख्यमंत्री जी बच्चों के उपहार पाकर बहुत अभिभूत हुए और बच्चों को शाबाशी व धन्यवाद दिया। मुख्यमंत्री जी ने अपने ट्वीट में कहा- मेरे जन्मदिन के अवसर पर बच्चों ने अपने ग्रीटिंग्स व पेंटिंग्स के द्वारा जो स्नेह भरी शुभकामनाएँ दी हैं, उनसे मेरा मन प्रफुल्लित हो उठा है। प्यारे बच्चों को धन्यवाद और ढेर सारा आशीर्वाद।

विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य

सुभाष शर्मा

हरियाणा प्रदेश आज विभिन्न क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके देशभर में अपनी पहचान को नई बुलंदियों पर ले जा रहा है। इसी श्रेष्ठता को श्रेष्ठतम करने में हरियाणा के शिक्षा विभाग ने भी एक बहुत बड़ी पहल की है। नई शिक्षा नीति को सही मायनों में नवीनतम बनाने व हरियाणा की युवा शक्ति को शैक्षणिक क्षेत्र में बुलंदियों पर पहुँचाने तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया के स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से हरियाणा शिक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कुशल नेतृत्व व शिक्षामंत्री कँवरपाल के कुशल मार्गदर्शन में कक्षा नौवीं से बाहरवीं के छात्र-छात्राओं को टैबलेट देकर प्रौद्योगिकी व तकनीक के इस युग में नया कदम बढ़ा दिया है।

5 मई का दिन हरियाणा प्रदेश विशेषकर शिक्षा विभाग के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है, जब प्रदेश के सभी राजकीय विद्यालयों के दसवीं से बाहरवीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों व इन कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों को टैबलेट दिए गए हैं। प्रदेश सरकार की इस महत्त्वाकांक्षी योजना के तहत 5 लाख टैबलेट दिए जा रहे हैं।

देश भर के लिए एक मिसाल कायम करते हुए हरियाणा ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का आगाज कर दिया। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के टैगोर सभागार से 'ई-अधिगम' योजना का शुभारंभ करते हुए सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को टैबलेट वितरित कर इस क्रांति का सूत्रपात किया। राज्य के अनेक स्थानों में भी यह टेबलेट वितरण समारोह आयोजित हुआ। मुख्यमंत्री इस दौरान प्रदेश के सभी जिलों से वर्चुअल माध्यम से जुड़े और बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों से संवाद भी किया। इस ऐतिहासिक अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूलों के छात्रों को पहले पुस्तकों को बैग में भरकर लाना पड़ता था। लेकिन आज से इस टैब में ही उनकी किताबें आएँगी।

कोरोना महामारी ने स्वास्थ्य के बाद शिक्षा को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। इस वजह से स्कूलों को बंद करना पड़ा और कोरोना की वजह से स्कूलों को सबसे आखिर में खोला गया। इससे विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित हुई। विद्यार्थी घर से पढ़ सकें, इसके लिए ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्था की गई। कुछ बच्चों के पास मोबाइल नहीं थे और आर्थिक तौर पर अभिभावक भी दिलवाने में असमर्थ

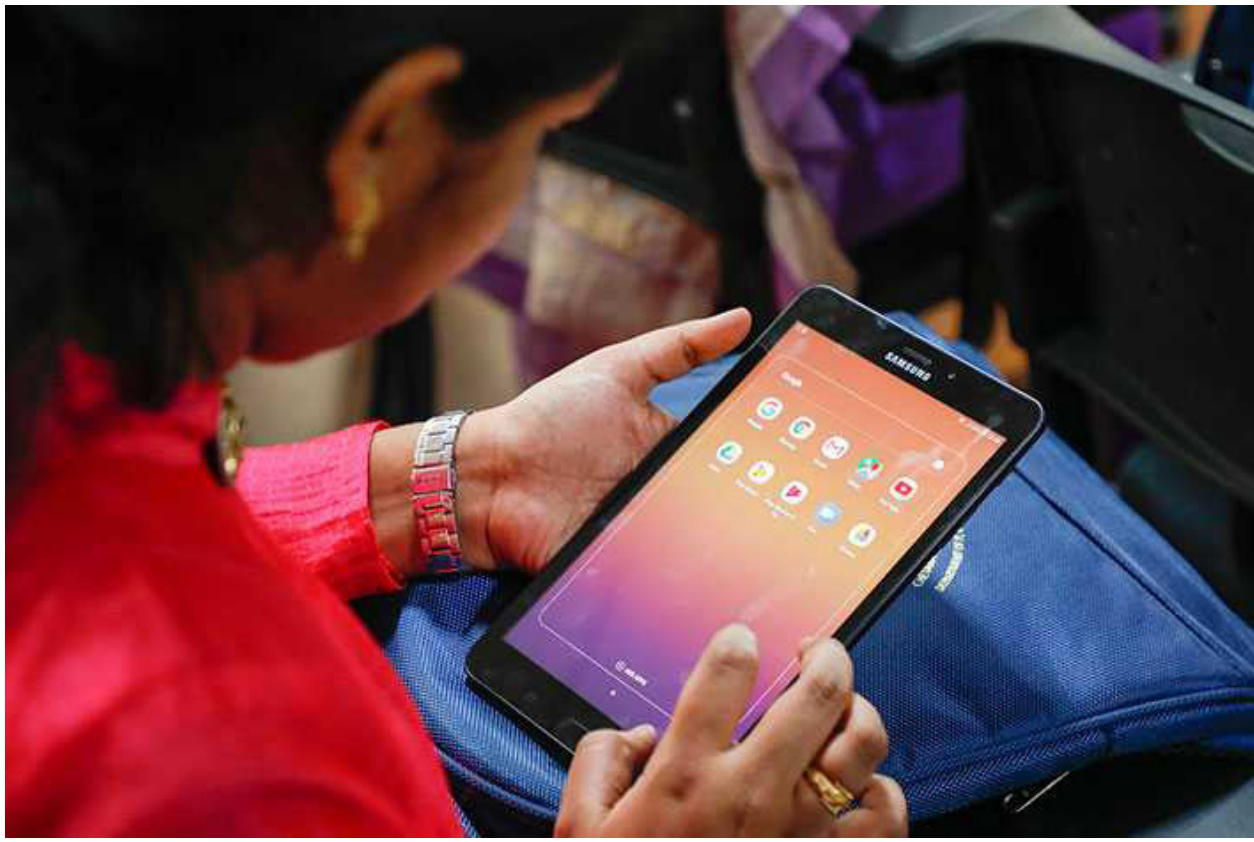

थे। ऐसे में सरकार ने हाथ आगे बढ़ाते हुए उन बच्चों को टेबलेट देने का निर्णय लिया। इसी कड़ी में प्रदेश भर के 10वीं से 12वीं तक के 3 लाख विद्यार्थियों को टैबलेट दिए जा रहे हैं और जल्द अन्य 2 लाख टैबलेट भी वितरित कर दिए जाएँगे। ये टैबलेट विद्यार्थियों के साथ-साथ 33 हजार शिक्षकों को भी दिए जा रहे हैं ताकि विद्यार्थियों को अच्छे से ऑनलाइन पढ़ाई करवाई जा सके। मुख्यमंत्री ने बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि अगले वर्ष 9वीं कक्षा के विद्यार्थियों को भी टेबलेट दिए जाएँगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी क्रांति की शुरुआत हो रही है। आज तक सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए देश के किसी और प्रदेश में इतना बड़ा अभियान नहीं चला। देश के किसी भी राज्य ने एक साथ 5 लाख बच्चों को टैबलेट वितरित नहीं किए। हरियाणा ऐसा पहला राज्य है। सरकार 9वीं से 12वीं के बच्चों को टेबलेट देगी। उन्होंने कहा कि एक समय था जब स्कूल में जाने के लिए पुस्तकों के साथ तख्ती पर लिखा करते थे लेकिन आज उस तख्ती की जगह टैबलेट ने ले ली है। अब बच्चे इस पर अभ्यास करेंगे। ई-अधिगम योजना शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। आने वाले समय में शिक्षा क्षेत्र में और भी कई सुधार किए जाएँगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड के कारण शिक्षा क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा और स्कूल बंद करने पड़े, लेकिन अब टैबलेट नया क्लासरूम बन गया है और ई बुक्स के माध्यम से तो यह पूर्ण क्लास रूम ही बन गया है।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में तकनीक को अपनाकर शिक्षा देने की योजना को देश भर में लागू करने के लिए वर्ष 2030 तक का लक्ष्य रखा गया है जबकि हरियाणा इसे पाँच वर्ष पूर्व लागू करने को लेकर कटिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यूनिवर्सिटी में केजी टू पीजी प्रोग्राम शुरू किया है। इसके तहत यूनिवर्सिटी में ही विद्यार्थियों को शुरूआती शिक्षा दी जाएगी। हरियाणा की दो यूनिवर्सिटी एमडीयू और कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी ने यह कार्यक्रम शुरू कर दिया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब क्रांति होती है तो टकराव होता है और युद्ध भी होते हैं। महाभारत के युद्ध से श्रीमद्भगवद्गीता निकली। ऐसा ही एक युद्ध तीन साल से कोविड महामारी के तौर पर जारी था। इसी से डिजिटलाइजेशन निकला। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज हम ऐसे युग में हैं जब प्रौद्योगिकी सरल और हमारी पहुँच के अंदर है । यदि एक बार इसमें रुचि लेंगे तो पूरी दुनिया के दरवाज़े खुल जाएँगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि डिजिटल के शब्दों से डी, आई, एल को हटा दिया जाए तो गीता बन जाता है और डी, आई,एल शब्द से दिल बन जाता है। इसका मतलब डिजिटल का अर्थ है कि दिल में गीता। यानी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कितनी गहरी सोच है कि भारत को डिजिटल करना यानि सभी के दिलों में गीता को बसाना व उसे व्यवहार में लाना है। गीता के द्वारा हमारे में एकाग्रता से किसी भी परिस्थिति में कुछ कर जाने की सोच उत्पन्न होती है, कोरोना जैसी महामारी में यही तो करके दिखाया है। सरकारी विद्यालयों के छात्रों जिन्होंने कभी डिजिटल रूप में पढ़ने का सोचा भी नहीं था, ये टैबलेट उनको विश्व के साथ जोड़ने जा रहे हैं। इससे जीवन में विज्ञान के बढ़ते महत्त्व को भी समझा व अपनाया है। इन टैबलेट के कारण अब सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मुकाबले किसी बात में कम नहीं आँके जाएँगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि फिनलैंड, ट्यूनेशिया व इजरायल जैसे देशों की सारी अर्थव्यवस्था डिजिटल मोड पर चलती है। इन देशों में प्रत्येक कार्य ही डिजिटल प्लेटफार्म पर होता है। आज किसी भी देश की तरक्की का आधार प्रौद्योगिकी व तकनीक का विकास है, इसीलिए प्रदेश के भावी नागरिकों को इनसे युक्त करवाने की जिम्मेदारी को सरकार ने समझते हुए यह कदम उठाया है।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए बजट की कोई कमी नहीं है। आज सबसे ज्यादा 20 हजार करोड़ रुपये का बजट शिक्षा के लिए दिया गया है।

स्कूलों में सुधार के लिए दो टास्क फोर्स बनाई गई हैं । एक टास्क फोर्स स्कूलों की सड़क, चारदीवारी, रास्ता, पानी, शौचालय और वहाँ की हरियाली के लिए और दूसरी टास्क फोर्स ड्यूल बैंच के लिए काम कर रही है। 70 प्रतिशत स्कूलों में ड्यूल बैंच की व्यवस्था है। बचे हुए 30 प्रतिशत स्कूलों में अगले एक वर्ष के अंदर ड्यूल बैंच की व्यवस्था कर दी जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भारतीय सेना में 10 प्रतिशत सैनिकों का हिस्सा हरियाणा का है। अधिकारी स्तर पर हमारी हिस्सेदारी कम है, इसे बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को एनडीए की तैयारी करवाई जा रही है। हरियाणा का युवक देश ही नहीं, विदेश में भी शिक्षण और नौकरी पाने वालों में पहली पसंद बने, इसी के मद्देनजर यह सभी प्रयास हरियाणा का शिक्षा विभाग कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विज्ञान की देन की वजह से आज आगे बढ़ने के रास्ते खुले हैं। हमारे विद्यार्थियों में बहुत क्षमता है और मुझे उम्मीद है कि सरकारी स्कूल के विद्यार्थी प्राइवेट स्कूल के विद्यार्थियों से भी आगे बढ़ेंगे। आज के युग में शिक्षा एक हथियार है। इसे पैनी धार देने का काम करेंगे और हम जय-जवान, जय-किसान और जय-विज्ञान के नारे पर आगे बढ़कर देश व प्रदेश का नाम रोशन करेंगे।

अंग्रेजी प्रवक्ता
रावमा विद्यालय, लल्हाड़ी कलां
यमुनानगर, हरियाणा

वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए वरदान

8.7 इंच लंबे टैबलेट में पर्सनलाइज्ड एडैप्टिव लर्निंग पर आधारित कई उन्नत सॉफ्टवेयर और सीखने की सामग्री है ताकि छात्रों को सभी विषयों का पूरा सिलेबस और जानकारी मिल सके और मॉक टेस्ट भी दे सकें। इसमें पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो/वीडियो सामग्री और परीक्षण उपकरण हैं। इंटरनेट का उपयोग करने के लिए छात्रों को प्रतिदिन 2 जीबी डेटा भी निःशुल्क दिया जा रहा है। टैबलेट न केवल बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए उपयोगी है, बल्कि यह छात्रों को नीट और जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी तैयार करेगा। छात्र 21 वीं सदी के कौशल जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण, क्लाउड कंप्यूटिंग, वर्चुअल रियल्टी आदि सीखेंगे। ई-अधिगम - अनुकूली मॉड्यूल के साथ सरकार की उन्नत डिजिटल हरियाणा पहल वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों के वंचित वर्गों के छात्रों के लिए एक आशीर्वाद है। यह पर्सनलाइज्ड एडैप्टिव लर्निंग (पीएएल) सॉफ्टवेयर पर आधारित भारत की पहली टैबलेट वितरण योजना है। कोविड -19 महामारी के कारण ऑनलाइन शिक्षा के दौरान जिन छात्रों को सबसे अधिक नुकसान हुआ, वे थे जो सबसे सस्ता स्मार्टफोन भी नहीं खरीद सकते थे। उनके लिए टैबलेट किसी सपने के सच होने जैसा है। डिजिटल इंडिया की यह पहल निजी और सरकारी स्कूलों के बीच की खाई को पाटेगी जिससे छात्र अधिक आत्मविश्वासी और तकनीक-प्रेमी बनेंगे।

बबीता यादव
पीजीटी अंग्रेजी
रावमा विद्यालय रेवाड़ी, हरियाणा

सपनों को पंख लगाती निःशुल्क टैबलेट योजना

प्रमोद कुमार

हरियाणा सरकार द्वारा आरम्भ की गई निःशुल्क टैबलेट योजना हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए संजीवनी से कम नहीं है। मार्च, 2020 में जब कोविड की त्रासदी आई तो लॉकडाउन के दौरान विद्यार्थियों की औपचारिक शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हुई। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले अधिकतर विद्यार्थी लाभ से वंचित वर्ग से आते हैं जिनके लिए ऑनलाइन शिक्षा का प्रबन्ध करना संभव नहीं था। इसके साथ-साथ आर्थिक हालात वैसे ही कमज़ोर हो गये थे क्योंकि लॉकडाउन ने मासिक आमदनी पर सीधे प्रहार किया। बच्चे को हार्डवेयर और इंटरनेट लेकर देना सबके बस की बात नहीं थी। बहुत से उदाहरण हमारे सामने हैं जब अभिभावकों ने गाय बेचकर बच्चे को ऑनलाइन शिक्षा के लिये मोबाइल का प्रबन्ध किया। प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को सभी सुविधायें प्रदान की गईं।

सरकारी स्कूल के बच्चे भी समुचित पढ़ाई कर सकें, इसके लिये अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा द्वारा एक टीम का गठन कर **मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा**

कार्यक्रम आरम्भ किया गया तथा एजुसैट टेलीविजन के माध्यम से पठन-पाठन आरम्भ हुआ। उसी दौरान इस बात का भी विचार उपजने लगा कि कुछ ऐसी व्यवस्था हो जिसमें डिजिटल डिवाइड समाप्त हो सके। अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय का मानना था कि विभाग को एक ऐसी व्यवस्था करनी होगी जो स्थायी हो, सहज सुलभ हो, जिसमें लर्निंग मैनेजमैंट सिस्टम के माध्यम से पाठ्यक्रम चले, पठन-पाठन भी हो, पर्यवेक्षण भी हो, इंटरएक्टिव हो, टैस्ट/परीक्षा भी हो, कौशल ग्रहण भी हो तथा पूरी व्यवस्था लर्निंग कंपीटेंसी की प्राप्ति में सहायक हो। इसमें अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य दो तरफा संवाद हो, प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता हो। यह तभी संभव है यदि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के उपकरण उपलब्ध करवाए जायें जिसमें टेबलेट/स्मार्ट फोन आदि शामिल हैं।

27 मई 2020 तथा 2 जून 2020 को माननीय

शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी कदम

प्रदेश सरकार का यह महत्त्वाकांक्षी टैबलेट बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम आने वाले समय में शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि जिन उद्देश्यों के तहत हरियाणा सरकार ने इस मिशन का शुभारंभ किया है विद्यार्थी उसका पूर्ण लाभ उठाएँगे। आने वाले समय में शिक्षा का डिजिटलाइजेशन होने जा रहा है। ऐसे में हमारे विद्यार्थी जितना जल्दी इस डिजिटल सिस्टम में सीखेंगे, वे उतना ही बेहतर परफॉर्म कर पाएँगे। हरियाणा की युवा शक्ति को शैक्षणिक प्रक्रिया में डिजिटल रूप से मजबूत करने के उद्देश्य से हरियाणा शिक्षा विभाग की अति महत्त्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने अपने कर कमलों से किया। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

निरूपमा कृष्ण
जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी
अंबाला, हरियाणा

हरियाणा का विद्यार्थी भी अब ग्लोबल स्टूडेंट हो जाएगा

विद्यार्थियों के लिए टैबलेट और डेटा ऐसे टूल हैं जिनसे 21वीं सदी के कौशल को ग्रहण करने में सहायता मिलेगी तथा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर नए अवसर मिलेंगे। ई-अधिगम से हरियाणा का विद्यार्थी भी अब ग्लोबल स्टूडेंट हो जाएगा। मुझे पूरी आशा है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के उच्च तकनीकी ज्ञान प्राप्ति के लिए यह कार्यक्रम एक प्रभावशाली कदम साबित होगा। शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने वाली इस योजना में विद्यार्थियों को टैब के साथ प्रतिदिन दो जीबी डेटा भी भी उपलब्ध कराया जा रहा है। टेबलेट में इस्तेमाल होने वाले नेट का पूरा खर्च भी प्रदेश सरकार द्वारा ही वहन किया जा रहा है।

सतपाल कौशिक
जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी
पंचकूला, हरियाणा

सुखद स्वप्न साकार हो गया

टेबलेट मिलने के बाद मैं अपनी पढ़ाई बिना किसी रुकावट के कर पा रही हूँ। अब जो पाठ विद्यालय में शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है, मैं उसकी वीडियो देखकर उसे अच्छे समझ पाने में सक्षम हो गई हूँ। इस टेबलेट का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि वे अब मैं अपना स्वयं का मूल्यांकन भी कर पाने में सक्षम हुई हूँ। अब जरूरी नहीं है कि केवल शिक्षक ही मेरा टेस्ट लें, मैं स्वयं भी अपनी सुविधानुसार अपना टैस्ट दे सकती हूँ। विभिन्न खूबियों से लैस इस टैब में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम की व्यवस्था है, जो पर्सनलाइज्ड अडेप्टिव लर्निंग पर आधारित है। इसका पूरा लाभ हम विद्यार्थियों को मिलेगा। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि जैसे कोई सुखद स्वप्न साकार हो गया हो। हरियाणा सरकार व शिक्षा विभाग का बहुत-बहुत आभार।

डोली
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

शिक्षा मंत्री महोदय की अध्यक्षता में विद्यालय शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारीगण की बैठक के दौरान कोविड-19 के मध्यनज़र स्कूल शिक्षा के भविष्य को लेकर चर्चा हुई। उसमें माननीय शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल ने विशेष रूप ये निर्देशित किया कि विद्यालय शिक्षा विभाग इस प्रकार की कोई व्यवस्था करे ताकि लाभ से वंचित वर्ग का विद्यार्थी भी ई-लर्निंग में शामिल हो सके, डिजिटल डिवाइड समाप्त हो सके तथा सरकारी व प्राइवेट स्कूलों के बच्चों में लर्निंग गैप न बढ़े। इसके लिये निःशुल्क डिजिटल डिवाइस सरकारी स्कूल के बच्चों को उपलब्ध करवाने की योजना तुरन्त प्रस्तुत करने बारे निर्देशित किया गया।

जब योजना एवं वित्त प्रबन्ध पर कार्य आरम्भ हुआ जो कई गम्भीर प्रश्न सामने आये। किसी राज्य के पास पहले ऐसी योजना भी नहीं थी जिसका अनुसरण किया जा सकता था। इस बात को लेकर निर्णय होना था कि मोबाइल फोन दिया जाये या टैबलेट दिया जाये, इसकी गारंटी-वारंटी का क्या होगा, बच्चे इसका अनुचित उपयोग न करें इसका क्या प्रबन्ध हो, इंटरनेट डाटा कहाँ से आएगा, उसका खर्च कौन उठाएगा, लर्निंग मैटीरियल क्या होगा, एलएमएस कैसे चलेगा, टैबलेट किस-किस कक्षा के विद्यार्थियों को दिया जाये, किस आकार का तथा किस कन्फीगरेशन का दिया जाए। फिर बैठकों और मन्त्रणाओं का दौर चला तथा जटिल निर्णय लिये गये। यहाँ माननीय शिक्षा मंत्री तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव दोनों ने इस बात पर बल दिया कि हार्डवेयर उच्च गुणवत्ता वाला, अच्छी कम्पनी का सामान दिया जाये। इसको लेकर कोई समझौता न हो, पूर्ण गारंटी हो तथा विद्यार्थी के पास लम्बे समय तक यह उपकरण बना रहे।

विभाग द्वारा निर्णय लिया गया कि आठ इंच से बड़ा टैबलेट लिया जाये जिसमें एमडीएम यानी मोबाइल डिवाइस मैनेजमैंट सिस्टम डलवाया जाये ताकि कोई भी विद्यार्थी अवांछित सामग्री न देख सके। एक अच्छा लर्निंग मैनेजमैंट सिस्टम जो 'पाल' (Personalized Adaptive Learning) आधारित हो, उसे पूरे डिजिटल कंटेंट, पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तकों, मॉक टैस्ट इत्यादि से सुसज्जित करके विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाया जाए। विद्यार्थियों को 2 जीबी इंटरनेट डाटा भी निःशुल्क दिया जाए ताकि इस पर उनका खर्च न हो। उपरोक्त के मध्यजनर 1000 करोड़ की महत्त्वाकांक्षी योजना बनाकर मुख्यमंत्री महोदय को प्रस्तुत की गई जो पूरे भारत में स्कूल शिक्षा में पहली बार इकलौती योजना थी। पूरे विश्व में स्कूल शिक्षा में कुल 6 से 7 देश हैं जो ' ब्रिंग योर ओन डिवाइस' के नाम से ऐसी योजना चला रहे हैं।

मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बैठक के दौरान यह निर्देशित किया गया कि टैबलेट की योजना कक्षा नौंवी से बारहवीं के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये बनाई जाए जिसमें लिंग, धर्म, जाति, क्षेत्र, समुदाय, श्रेणी का कोई भेद न हो। सरकारी विद्यालय में उक्त कक्षाओं में पढ़ने वाला प्रत्येक विद्यार्थी इस योजना का पात्र होगा। मुख्यमंत्री जी हमेशा स्मार्ट टीचिंग के पक्षधर रहे हैं तथा स्वयं भी जब बैठक में आते हैं तो कागज़ की फाइलों की अपेक्षा अपना टैबलेट लेकर आते हैं। उन्हें मालूम है कि डिजिटल युग में डिजिटल डिवाइस कितने महत्त्वपूर्ण हैं। मुख्यमंत्री महोदय ने उसी बैठक में दोहराया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 आ गई है। हरियाणा के विद्यार्थियों को यदि 21वीं सदी के कौशलों में दक्ष बनाना है तो यह तभी संभव है यदि उन्हें पर्सनल डिजिटल डिवाइस उपलब्ध करवाये जायें। इस योजना पर 1000 करोड़ का निवेश आज की आवश्यकता है तथा हरियाणा राज्य सहर्ष इस निवेश के लिए तैयार है। सभी समुचित वित्त प्रावधान के निर्देश जारी किये गये। इस प्रकार अनेक चरणों से गुजरते हुए हरियाणा की निःशुल्क टैबलेट आपूर्ति का ग्लोबल टैंडर जारी हुआ तथा मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली हाई पावर परचेज़ कमेटी द्वारा सैमसंग कंपनी का मॉडल खरीदने की अनुमति प्रदान कर दी गई है तथा यह योजना साकार हो गई है। विभिन्न जिलों में टैबलेट पहुँच गये हैं, इनमें वांछित सामग्री डाली जा रही है तथा शीघ्र ही ये टैबलेट

टैबलेट के नए पंखों से भरेंगे उड़ान

मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मेरे हाथ में भी अपना टैबलेट होगा। टैबलेट पाकर मैं बहुत खुश हूँ तथा मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी का आभार व्यक्त करती हूँ। ये टैबलेट मुझे नए पंखों की तरह से दिए जा रहे हैं जिनसे मैं नई उड़ान भर पाऊँगी। अब ऑफलाइन के साथ ऑनलाइन भी पढ़ाई कर पाऊँगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डिजिटल इंडिया को जो स्वप्न दिखाया था, वह साकार हो गया है। अब विश्वस्तरीय शिक्षकों का ज्ञान भी हमें संबंधित विषयों में मिल पाएगा। मैं हरियाणा सरकार की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझ जैसे छात्रों के लिए यह योजना लागू कर हमें नई प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ा है।

भूमिका
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
झज्जर, हरियाणा

विद्यार्थियों के हाथों में पहुँच जाएँगे।

प्रथम चरण में पाँच लाख टैबलेट पहुँच रहे हैं। कक्षा ग्यारहवीं का आरम्भ अक्सर मई के अन्तिम सप्ताह में होता है क्योंकि दसवीं का परिणाम देरी से आता है उनके लिये खरीद अगली खेप में होगी। सरकार द्वारा शिक्षकों के लिए भी निःशुल्क टैबलेट की व्यवस्था की गई है। प्रथम चरण में सभी पीजीटी को ये टैबलेट दिये जाएँगे क्योंकि 'पाल' यानी वैयक्तिकृत अनुकूली शिक्षण सॉफ्टवेयर के माध्यम से अध्यापक, विद्यार्थी, स्कूल मुखिया, एससीईआरटी तथा निदेशालय परस्पर जुड़े रहेंगे।

हरियाणा में एक विशेष प्रकृति तथा प्रवृत्ति होती है, जिस भी विषय वस्तु को हरियाणवी अंगीकार करता है तो उसे चरम तक छूने के लिये जी जान लगा देते है। चाहे युद्ध के मैदान में अपना पराक्रम दिखाना हो, चाहे खेल के मैदान में परचम लहराना हो, हरियाणवी अपनी पूर्ण क्षमता का दोहन करते हैं। इसी नज़रिये से अगर इस योजना को देखें तो स्कूल स्तर पर जिन विद्यार्थियों को अब डिजिटल एक्सेस मिल रहा है, उन्हें आने वाले वर्षों में आप आईटी क्षेत्र में या 21वीं सदी के कौशलों जिसमें एआई, एआर, वीआर, डाटा माइनिंग, ब्लॉक चैन मैनेजमैंट, कोडिंग इत्यादि के हाथ आजमाते दिखेंगे।

इजराइल और ट्यूनिशिया जैसे देशों में यह व्यवस्था पहले से है। जिसका परिणाम है। उनके यहाँ कितने नवाचार होते हैं। फिनलैंड जैसे देश ने पहले नोकिया मोबाइल फिर एंग्री बर्ड जैसी वीडियो गेम से अपनी इकोनॉमी में कितनी वृद्धि की है। सूचना प्रौद्योगिकी में अपार संभावनायें तथा अपार रोज़गार है। भारत की अन्तरराष्ट्रीय रोजगार में हिस्सेदारी को यदि अगली पंचवर्षीय योजना में दो गुणा करना है तो हरियाणा का यह प्रयास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। अब हरियाणा केवल खेल के मैदान के पहलवान ही पैदा नहीं करेगा, बल्कि आईटी के क्षेत्र के योद्धा भी पैदा करेगा जो कल दुनिया के जाने माने लोग होंगे, कल के सुन्दर पचई, सत्य नडेला अब हरियाणवी ही होने वाले हैं। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले ये विद्यार्थी सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, गेमिंग, बीपीओ, डाटा माइनिंग, डेटा विश्लेषक से लेकर क्लाउड कम्प्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के कौशलों को प्राप्त करेंगे।

मैंने जीवन में शिक्षा के क्षेत्र में पहला बदलाव तब देखा जब आरटीई एक्ट आया, दूसरा बदलाव अब देखने को मिलेगा। सरकारी स्कूलों का जहाँ इससे महत्त्व बढ़ेगा वहीं दाखिला भी बढ़ेगा तथा इससे यह भ्रम भी टूटेगा कि सरकारी विद्यालय पिछड़े हैं। इससे ऑनलाइन शिक्षण में ग्लोबल द्वार खुलेंगे, हरियाणा के छछरौली कलेसर, फिरोजपुर झिरका में बैठा विद्यार्थी अमेरिका, जर्मनी के अति विशिष्ट संस्थानों के अति विशिष्ट विशेषज्ञों से पढ़ेगा। बाबा साहेब अम्बेडकर ने ठीक ही तो कहा है कि शिक्षा शेरनी का दूध है, जो पियेगा उसे दहाड़ना तो आ ही जायेगा। लाभ से वंचित वर्ग केवल संसाधनों के कारण ही पिछड़ता है। राज्य का यह प्रयास गरीब तथा अमीर बच्चे को एक ही पायदान पर लाकर खड़ा कर रहा है। वह खाई अब समाप्त हो रही है, अब सबके साथ पढ़ने और बढ़ने का वक्त आ गया है।

राज्य के इस प्रयास का अनुसरण होना भी आरम्भ हो गया है। प्रदेश ने स्कूल शिक्षा स्तर पर इस निःशुल्क टैबलेट योजना से उन राज्यों के लिए चुनौती पैदा कर दी है जो शिक्षा के नाम पर कुछ स्कूलों को चमकाकर वाहवाही लूटने में लगे हुये थे। इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह लाभ सीधे विद्यार्थी को मिल रहा है। ऑनलाइन माध्यम से अब प्रत्येक बच्चा ग्लोबल तक पहुँच सकेगा। उसके लिये आकाश उपलब्ध है, उड़ान भरने की बाधायें समाप्त हो गई हैं।

यह हरियाणा में सामाजिक बदलाव के लिये भी महत्त्वपूर्ण योजना है। नेल्सन मंडेला ने शिक्षा को ऐसे हथियार के रूप में बताया है जिससे संसार को बदला जा सकता है। हरियाणा की इस योजना ने वह हथियार, वो उपकरण बच्चों को दे दिया है जो स्वयं को, समाज को, राज्य, देश तथा संसार को बदलने का काम करेगा। दूध, दही का खाना खाने वाला, सीधे-साधे बाणे वाला हरियाणवी अब जय जवान, जय किसान के साथ-साथ जय विज्ञान भी कहेगा।

प्रमोद कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

किसकी क्या होगी भूमिका?

मास्टर ट्रेनर- ये सभी पीजीटी को टैब उपयोग करने की ट्रेनिंग देंगे। किस पीजीटी ने ऑनलाइन पढ़ाने के लिए टैब का कितना उपयोग किया है। इसका डैशबोर्ड भी मास्टर ट्रेनर के पास खुलेगा।

लाइब्रेरी इंचार्ज- टैब विद्यालय की लाइब्रेरी की प्रॉपर्टी होगी और लाइब्रेरी इंचार्ज इनका इंचार्ज होगा। प्रत्येक टैब का विद्यालय की लाइब्रेरी के स्टॉक रजिस्टर में इंद्राज किया जाएगा। लाइब्रेरी इंचार्ज ही स्टॉक रजिस्टर में एंट्री करके बच्चों को टैब इशू करेगा।

यदि बच्चा विद्यालय छोड़ना चाहता है तो वह टैब को लाइब्रेरी इंचार्ज के पास जमा करवाएगा और लाइब्रेरी इंचार्ज से उसे एनओसी लेनी होगी।

स्कूल इंफोर्मेशन मैनेजर यानी सिम एवं क्लर्क- समस्त रिपोर्टिंग और डाटा एंट्री कार्य करना सिम की जिम्मेदारी होगी। मुख्य रूप से सिम अवसर पोर्टल पर टैब का आईएमईआई नम्बर, ऑनलाइन टैब आबंटन, ऑनलाइन शिकायत आदि का कार्य देखेगा।

प्रत्येक बच्चे एवं उसके अभिभावक के आधार नम्बर, पता, एसआरएन आदि एक्सेल शीट में बनाकर विभाग को भिजवायेगा तथा एमआईएस पोर्टल पर समस्त बच्चों का डाटा अपडेट करेगा क्योंकि यहीं से सारा डाटा सिंक होकर टैब की एप में इस्तेमाल होगा। साथ ही क्लर्क भी इस कार्य में मदद करेगा।

कक्षा इंचार्ज- समस्त बच्चों का डाटा इकट्ठा करेगा। सिम-कार्ड के लिए जरूरी आईडी प्रूफ इकट्ठे करेगा और उसकी ऑनलाइन एंट्री अवसर रिपोर्ट पोर्टल पर करना सुनिश्चित करेगा।

विषय अध्यापक- टैब के द्वारा ऑनलाइन पढ़ाई करवाएगा, ऑनलाइन गृहकार्य देगा, ऑनलाइन टैस्ट लेगा, ऑनलाइन टीचर डायरी भरेगा। 1 जुलाई के बाद भी ऑनलाइन पढ़ाई जारी रहेगी और सप्ताह में 12 पीरियड टैब से ऑनलाइन लेने जरूरी होंगे।

विद्यालय मुखिया- अपने विद्यालय के सभी पीजीटी की मॉनिटरिंग करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि टैब का समुचित उपयोग बच्चे और टीचर कर रहे हैं। ऑनलाइन टीचर डायरी को चैक व अप्रूव करेगा। बच्चे और टीचर ने टैब पर क्या पढ़ा/पढ़ाया और कितना उपयोग किया इसकी पल-पल की रिपोर्ट रियल टाइम में मोबाइल डिवाइस मैनेजमैंट सॉफ्टवेयर से प्रिंसिपल, बीईओ, डीईओ, निदेशक महोदय तथा मुख्यमंत्री महोदय के कार्यालय को उनके डैशबोर्ड पर मिलेगी। अभी हिंदी, अंग्रेज़ी और सामाजिक विज्ञान की ऑनलाइन पढ़ाई टैब से होगी। बहुत जल्दी ही अन्य विषय भी इसमें जोड़ दिए जाएँगे।

भारत व हरियाणा का इतिहास से जुड़ेंगे विद्यार्थी

किसी भी देश व प्रदेश की युवा पीढ़ी को उनके इतिहास से अवगत कराना उतना ही आवश्यक है जितना कि उन्हें अपने परिवार व पूर्वजों की जानकारी होना। ऐसा करने से न केवल उनकी अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता बढ़ती है बल्कि उन्हें अपने पूर्वजों के बलिदानों से प्रेरणा मिलती है। जिस प्रकार से मिट्टी में फसल उगाने के लिए खाद इत्यादि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार युवा पीढ़ी को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रखने के लिए उन्हें उनके गौरवशाली इतिहास से रूबरू कराने की जरूरत होती है। प्रत्येक देश का अपना इतिहास होता है, परंतु उसके बहुत सारे पहलू अनछुए रह जाते हैं, जिसके कारण इतिहास के पहुलओं को लेकर अनभिज्ञता रह जाती है। ऐसे पहुलओं को जन-जन तक पहुँचाने तथा युवाओं को देश व प्रदेश के ज्ञात-अज्ञात वीर सैनिकों के बलिदानों की जानकारी देने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार ने पहल करते हुए कक्षा छठी से दसवीं तक के इतिहास के पाठ्यक्रम में बदलाव किया है।

पुरानी कहावत है कि जो पेड़ अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं वे अधिक मज़बूत होते हैं और उन पर फल भी अधिक लगते हैं। इसी प्रकार जो समाज अपनी विरासत और अपने इतिहास से जुड़ा रहता है, वह अधिक मज़बूत होता है और अधिक विकसित होता है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, एससीईआरटी तथा शिक्षा विभाग के संयुक्त प्रयासों से छठी से दसवीं तक के इतिहास के पाठ्यक्रम का नया प्रारूप तैयार किया गया है। जिसका लोकार्पण शिक्षामंत्री कँवर पाल ने पंचकूला से किया। उन्होंने छठी से 10वीं कक्षा की इतिहास की नये पाठ्यक्रम वाली पुस्तकों का टैबलेट के माध्यम से लोकार्पण किया। इस अवसर पर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन जगबीर सिंह, शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, माध्यमिक शिक्षा विभाग के महानिदेशक डॉ. जे. गणेशन, एससीआरटी के पूर्व निदेशक डॉ. ऋषि गोयल, सहायक निदेशक कुलदीप मेहता, प्रोग्राम ऑफिसर प्रमोद कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर रमेश कुमार, के.सी. यादव भी उपस्थित थे।

शिक्षा मंत्री कँवर पाल ने कहा कि नई पुस्तकों में कक्षा छठी और सातवीं में प्राचीन भारतीय समाज के शासन, कला, साहित्य, विज्ञान की उपलब्धियों को उचित स्थान दिया गया है। कक्षा 6 से 10 तक इतिहास को हमारा भारत-1, हमारा भारत-2, हमारा भारत-3, हमारा भारत-4 एवं भारत विश्व के रूप में कक्षानुसार एवं क्रमानुसार दिया गया है। नई पुस्तकों में कक्षा 6, 7 व 10 में प्राचीन भारतीय सभ्यता, समाज, शासन, सत्ता, साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन की प्रमुख उपलब्धियों को समुचित स्थान देकर वर्णित किया गया है तथा साथ ही साथ शिक्षा के क्षेत्र में विश्व गुरु रहे भारत का समुचित विवरण दिया गया है।

श्री कँवर पाल ने बताया कि नई पाठ्यपुस्तकों में सरस्वती सिंधु सभ्यता को छात्रों के सामने रखा गया है। हरियाणावासियों द्वारा इसे ठीक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि नई पुस्तकों में उन भारतीय वीरों की जानकारी को प्रमुखता से दर्शाया गया है जिन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लिया। नई पुस्तकों में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को भी इसकी समग्रता में छात्रों के सामने रखा गया है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर समाज के अलग-अलग वर्गों, व्यक्तियों द्वारा इस संघर्ष में दिये गए योगदान को सम्मान और गौरवपूर्ण ढंग से दिखाने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा ज्ञात-अज्ञात नायकों की भी इन पुस्तकों में जानकारी दी गई है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन जगबीर सिंह ने बताया कि वैसे तो पूर्व की पुस्तकों में दिल्ली सल्तनत एवं मुगल प्रशासकों के शासन की विस्तार से चर्चा हुई थी, लेकिन नई पुस्तकों में उनके साथ साथ उनके विरुद्ध हुए स्थानीय, राष्ट्रीय प्रतिरोधों एवं संघर्षों को भी यथोचित स्थान देने का प्रयास हुआ है। नई पुस्तकों में हरियाणा के राजा हर्षवर्धन, राव तुलाराम, राजा नाहर सिंह, हुकमचंद जैन, उधमीराम, विद्यावती, नेकीराम शर्मा, श्रीराम शर्मा, छोटूराम इत्यादि महान नायक-नायिकाओं की भूमिकाओं का भी उल्लेख हुआ है। साथ-साथ ही अंबाला, हाँसी, झज्जर, रेवाड़ी, रानिया, सिरसा, बल्लभगढ़, गुरुग्राम आदि स्थानों पर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुई घटनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। नौवीं की पुस्तकों में क्रांतिकारी आंदोलन को समुचित स्थान देते हुये बिरसामुंडा, बलवंतराय, चापेकर बंधु, वीरसावरकर, अरविंद घोष, लाला हरदयाल, करतार सिंह सराभा, रवींद्रनाथ सान्याल, अशफाक उल्लाखान, अब्दुल गफ्फारखान, भगत सिंह, दुर्गा भाभी, राजगुरु, सुखदेव, उधम सिंह के योगदान का विस्तार से वर्णन हुआ हैं। कक्षा आठवीं में राष्ट्रीय भक्ति आंदोलन में संत रविदास, कबीर, दादु, नामदेव, रामानंद का उल्लेख हुआ है तथा सिख गुरु परंपरा के अंतर्गत सभी दस गुरुओं एवं बाबा बंदा सिंह बहादुर के संघर्ष का भी विवरण किया गया हैं।

एससीआरटी के पूर्व निदेशक डॉ. ऋषि गोयल ने बताया कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना के अनुरूप पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण वनवासी, गिरिवासी सभी भूभागों से संबंधित घटनाओं और व्यक्तियों को नई पुस्तकों में स्थान देने की कोशिश की गई है। एसोसिएट प्रोफेसर रमेश कुमार ने कक्षा 8वीं में मुगल, सिख गुरु परंपरा, भक्ति आंदोलन, छत्रपति शिवाजी, 18वीं सदी का भारत, यूरोपियन घुसपैठ, कंपनी की शोषणकारी नीतियाँ और 1857 की महान क्रांति, कक्षा 9वीं की पुस्तक में भारत का सामाजिक व सांस्कृतिक पुर्नजागरण, 1857 से 1919 उदारवादी-राष्ट्रवादी, महात्मा गांधी और आज़ादी का संघर्ष, आज़ाद हिंद फौज, नेता जी की भूमिका तथा भारत का विभाजन के बारे में सामग्री को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

सुभाष शर्मा
प्रवक्ता, अंग्रेजी
रावमा विद्यालय, लल्हाड़ी कलां, यमुनानगर

लर्निंग गैप पूरा करेगा प्रोजेक्ट 'उड़ान'

दो वर्षों से कोविड़ जैसी वैश्विक महामारी के दौरान बच्चे विद्यालय आने में असमर्थ रहे। यूँ तो विभाग द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रमों के अंतर्गत विभागीय निर्देशानुसार अध्यापक विद्यार्थियों के साथ लगातार जुडे रहे, लेकिन इतना होने के बावजूद भी बच्चे वर्तमान कक्षा स्तर के पिछड़ गए हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों के अधिगम स्तर में दिनोंदिन होते व्यवधान को देखते हुए कक्षा के समकक्ष लाना अध्यापकों के लिए एक ज्वलंत व चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। अध्यापकों व बच्चों की समस्याओं को दृष्टिगत करते हुए विभाग द्वारा 'उड़ान' प्रोजैक्ट की शुरुआत की गई जिसका 27 अप्रैल, 2022 को माननीय शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल द्वारा लॉन्च किया गया।

क्या है उड़ान प्रोजैक्ट- कोरोना काल के दौरान विद्यालय बंद रहने से जिन विद्यार्थियों का अधिगम स्तर औसत से भी कम हो गया, उनके अधिगम स्तर को कक्षा के समकक्ष लाने हेतु विभाग द्वारा उड़ान प्रोजैक्ट लागू किया गया। यह एक प्रकार का उपचारी शिक्षण के रूप में बच्चों के अधिगम स्तर का संवर्धन करने में सहायक सिद्ध होगा। इसके अंतर्गत 'विद्यार्थी कार्य पत्रक व शिक्षक संदर्शिका' का निर्माण किया गया है। अध्यापकों व बच्चों की समस्याओं को दृष्टिगत करते हुए विभाग द्वारा 'उड़ान' प्रोजैक्ट शुरु किया गया। जिसके अन्तर्गत कक्षावार व विषयवार पूर्व अपेक्षित दक्षता आधारित गतिविधियाँ बनाई गई हैं, जो काफी हद तक बच्चों के लर्निंग गैप को पूर्ण करते हुए उन्हें कक्षा के समकक्ष लाने में सहयोगी सिद्ध होगी। उड़ान के अंतर्गत विद्यार्थी कार्यपत्रक में जो गतिविधियाँ सम्मिलित की गई हैं, वे कक्षा के स्तरानुसार सरल, रोचक, परिवेश आधारित व ज्ञानपरक हैं। कार्यपत्रक में दी गई विषयवस्तु व गतिविधियाँ बच्चों को पुस्तकालय, समाज, परिवेश, परिवार आदि न जाने कितने क्षेत्रों से जुड़ने का अवसर प्रदान करेंगी।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी व कक्षा की विशेष भूमिका होती है। एक शिक्षक ही शिक्षार्थी का भविष्य निर्माता होता है, देश के भावी कर्णधार के रूप में प्राथमिक स्तर से ही शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुगम, रोचक व प्रभावी बनाने की आवश्यकता है क्योंकि यहीं से बच्चे की सीखने की प्रक्रिया का प्रारंभ होता है। सीखना, सीखे गए ज्ञान को अर्जित करना व अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित करना आवश्यक होता है। बच्चों के अधिगम स्तर का संवर्धन हेतु कक्षा-शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाने की आवश्यकता है

शिक्षक क्या करें?

बच्चों की समस्या जानना- कक्षा संबंधी, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक

रोचक व प्रभावी कक्षा शिक्षण- सचित्र दीवारें, हवादार, प्रकाश की व्यवस्था, संख्यानुसार बैठने की व्यवस्था, श्यामपट्ट (चॉक/मार्कर/डस्टर), पुस्तक-कोना (बुक कार्नर) की व्यवस्था

कौशल आधारित शिक्षण- सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। प्रत्येक से संबंधित गतिविधि, सक्रिय प्रतिभागिता सुनिश्चित करना, कक्षा में धीमी गति से सीखने वाले को प्राथमिकता देना।

बहुआषिकता को कक्षा-कक्ष में स्थान देना- कक्षावार अपने विवेक से, अभिव्यक्ति गतिविधि (एकल/समूह)

अधिगम संवर्धन- बच्चों की पहचान, किस क्षेत्र में बच्चों का कम रूझान, पीयर ग्रुप, व्यक्तिगत समस्या है तो शिक्षक पुनः प्रयास करें तथा उपचारी शिक्षण करें।

उपचारी शिक्षण क्या है-

विद्यार्थी अपनी वर्तमान कक्षा में आने तक उस स्तर की पूर्व अपेक्षित दक्षताएँ अर्जित करने में असमर्थ रहता है। ऐसी स्थिति में वह अन्य बच्चों से पिछड़ जाता है और कक्षा के समकक्ष नहीं चल पाता। अध्यापक द्वारा बच्चों की अधिगम संबंधी समस्या जानकर उनका निदान करने के लिए जो शिक्षण तरीका अपनाया जाता है, वही उपचारी शिक्षण कहलाता है।

उपचारी शिक्षण हेतु शिक्षक क्या करें?

सर्वप्रथम बच्चों की पहचान करें जो अन्य बच्चों से किसी कारणवश पीछे रह गए हैं। (कारण भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, जैसे- पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, वैयक्तिक) बच्चों के कौशल की पहचान करें जिसकी वजह से वह पीछे रहा (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) कौशल अनुसार बच्चों के समूह बनाएँ।

राजेश यादव
एससीईआरटी हरियाणा
गुरुग्राम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की कक्षा के स्तरानुसार सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुदृढ बनाना अत्यावश्यक है। विगत समय में वैश्विक महामारी के कारण कक्षा-शिक्षण बाधित रहा। अधिकांश बच्चे अपने स्तरानुसार दक्षताएँ अर्जित करने में असफल रहे। अतः उनके उपचारी शिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। 'उड़ान' प्रोजेक्ट के जरिये यही करने का प्रयास किया जा रहा है। विभाग के निर्देशानुसार एससीईआरटी, गुरुग्राम द्वारा कक्षावार व विषयवार कार्य पुस्तिकाएँ तैयार की हैं, जिनके आधार पर विद्यालयों में उपचारी शिक्षण सफलता के साथ चल रहा है।

विवेक कालिया
निदेशक
एससीईआरटी, गुरुग्राम

प्रार्थना सभा को बनाएँ रोचक, प्रेरक और अनुशासित

सत्यवीर नाहड़िया

जैसा कि हम जानते हैं कि प्रार्थना सभा किसी भी विद्यालय की दिनचर्या का आइना होती है। हरियाणा के शिक्षा विभाग में सेवारत रहते हुए मुझे गत 23 वर्षों से प्रार्थना सभा के संयोजन, संपादन व संचालन का सौभाग्य मिला है, जिसमें विभिन्न नवाचारों के माध्यम से बहुत कुछ सीखने को मिला। अपने इसी अनुभव के आधार पर मैं इस बीस मिनटीय प्रार्थना सभा को प्रेरक, सूचनापरक, रचनात्मक तथा अनुशासित बनाए रखने का पक्षधर, पोषक एवं सजग प्रहरी रहा हूँ। प्रार्थना सभा के मुख्य घटक कमांड, प्रार्थना, आज के मुख्य समाचार, आज का विचार, उपस्थिति एवं निरीक्षण, संबोधन, सूचनाएँ, राष्ट्रगान आदि होते हैं, जिनके साथ जरूरत के अनुसार कुछ समसामयिक पक्ष जुड़ते रहते हैं। जिस विद्यालय की प्रार्थना सभा का प्रारूप जितना अनुशासित, प्रेरक एवं नवाचारी रचनात्मकता से ओतप्रोत होता है, उस विद्यालय में उतना ही नित्य नई ऊर्जा का संचार होता चला जाता है तथा धीरे-धीरे विद्यालय स्वयं आत्मानुशासन की ओर अग्रसर होकर हर क्षेत्र में उत्कृष्टता के नए आयाम रचता है। आइए, एक रचनात्मक प्रार्थना सभा के विभिन्न घटकों के बारे में जानें।

कमांड :

प्रार्थना की घंटी बजते ही प्राचार्य एवं स्टाफ की देखरेख में विद्यार्थियों का प्रार्थना के लिए पंक्तिबद्ध होने की चहलकदमी के साथ ही कमांड जरूरी हो जाती है। विद्यालय के डीपीई, पीटीआई (उनकी अनुपस्थिति में किसी शिक्षक) द्वारा इस दायित्व का निर्वहन किया जाना स्कूल लीडर सुनिश्चित करें। इस दायित्व को सदनवार छात्र-छात्राओं द्वारा भी संपादित करवाया जाए ताकि उनमें आत्मविश्वास पैदा हो। भले ही यह कमांड किसी प्रतिनिधि द्वारा दी जा रही होती है, किंतु इसकी प्रभावी अनुपालना तभी हो सकती है, जब सभी स्टाफ मेंबर्स विद्यार्थियों को संबंधित कमांड की प्रतिपुष्टि देने के लिए व्यक्तिगत दिशा निर्देशों के साथ अवलोकन करते रहें।

प्रार्थना :

अनुशासित कमांड के बाद विद्यालय की शुरुआत सामूहिक प्रार्थना से की जाती है, जिसके लिए वाद्ययंत्रों एवं साउंड के साथ सुरीले विद्यार्थियों की अगुवाई में संपादित किया जाना सदन प्रभारी के माध्यम से स्कूल लीडर सुनिश्चित करें। प्रार्थना प्रार्थना ही हो, भजन आदि नहीं। सदनवार ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों को इसमें प्रतिनिधित्व दिया जाए। प्रार्थना 3 से 5 मिनट की हो। समय-समय पर विद्यार्थियों को प्रार्थना का महत्त्व, प्रार्थना की मुद्रा तथा इसे एक साथ मिलकर सस्वर गाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। कभी-कभार प्रार्थना के दौरान चक्कर खाकर गिरने वाले विद्यार्थी की घटना को लेकर इसके कारण एवं निवारण पर भी टिप्पणी/चर्चा अनिवार्य है।

आज के प्रमुख समाचार :

प्रार्थना-सभा के दैनिक स्तंभ आज के प्रमुख समाचार के अंतर्गत केवल उन्हीं समाचारों को स्थान दिया जाए, जो सूचनापरक, बाल मनोविज्ञान पर आधारित, प्रेरक, सामान्य-ज्ञान केंद्रित हों। कई बार पूरे समाचार-पत्र में से ऐसे पाँच समाचार बड़ी मुश्किल से मिल पाते हैं, वस्तुतः यह सुनिश्चित किया जाए कि समाचार-पत्रों में प्रकाशित हैडलाइंस या अन्य प्रमुख समाचार, विद्यालयों के लिए उचित हैं भी कि नहीं। राजनीतिक उठापटक तथा नकारात्मक समाचारों को कभी स्थान न दें। उपरोक्त दायरे के अनुसार ही समाचार चयन कर हर बार नए बच्चों से प्रस्तुत करवाने का प्रयास करें। अवसर विशेष पर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुना जा सकता है। यह भी प्रयास रहे कि अलग-अलग वार को हिंदी, अंग्रेजी संस्कृत भाषाओं में समाचार प्रस्तुत किए जाएं। साप्ताहिक तथा मासिक प्रारूप में इन समाचारों पर आधारित समसामयिकी, प्रश्नोत्तरी आदि भी रखी जा सकती है। इन समाचारों को अच्छी लिखाई वाले विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन समाचार पटों पर लिखवाया जाए।

आज का विचार :

समाचार के बाद आज का विचार प्रस्तुत कर प्रार्थना सभा में प्रतिदिन किसी महापुरुष, दार्शनिक, लेखक, संत कवि आदि के विचार को उनके नाम के साथ प्रस्तुति दी जाए। दिवस विशेष, जयंती या पुण्यतिथि पर संबंधित महापुरुष के कथन को ही महत्त्व देकर उनका भावपूर्ण स्मरण किया जा सकता है। इस पक्ष में भी हर रोज नए-नए बच्चों को मंच प्रदान किया जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा बच्चों को मंच पर आने का अवसर दिया जा सके। यह सब सदन प्रभारियों की थोड़ी-सी जागरूकता तथा प्रोत्साहन से संभव है। प्रार्थना सभा के बाद समाचार की भाँति आज के विचार को भी किसी निर्धारित विचार पट पर लिखवाया जाए।

उपस्थिति एवं निरीक्षण-पक्ष :

इस पक्ष के अंतर्गत एक ओर जहाँ पूरे विद्यालय की एक साथ कक्षा मॉनिटर्स के माध्यम से सामूहिक उपस्थिति दर्ज की जाती है, वहीं सभी कक्षा प्रभारी अपनी अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की यूनिफार्म, नाखून, बाल, दैनिक प्रार्थना सभा प्रतिभागिता आदि का बहुआयामी सूक्ष्म निरीक्षण भी करना सुनिश्चित करें, जिसमें कोई कमी पाने पर सजा देने की बजाय उनका मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन करें। स्कूल मुखिया इस निरीक्षण के साथ प्रार्थना-सभा के सभी घटकों में विद्यार्थियों एवं प्रभारियों की रचनात्मक भूमिका का अवलोकन, मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन सुनिश्चित करें।

संबोधन :

प्रार्थना सभा का यह पक्ष 2 से 3 मिनट का रखा जाए, जिसमें दिवस विशेष के महत्व या विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारने के उद्देश्य से प्रेरक संबोधन रखा जाए, जिसमें ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को पूर्व निर्धारित विषय के अनुसार आमंत्रित किया जाए। कभी-कभी प्राचार्य भी इस पक्ष में शामिल होकर इस दैनिक स्तंभ को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं। नए सत्र की शुरुआत पर इसे शिक्षक परिचय शृंखला के तौर पर भी बड़ी रोचकता से चलाया जा सकता है, जिसमें प्रतिदिन एक शिक्षक को उनके परिचय के साथ दो मिनट में कोई प्रेरक प्रसंग या किसी भी प्रासंगिक विषय पर विचार रखने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इसी तरह सदन की विभिन्न गतिविधियों से जुड़े विद्यार्थियों, मॉनिटर्स, विभिन्न क्लब्स के प्रतिनिधि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अपने प्रभार, विद्यालय तथा विभाग के संबंधित पक्ष की जानकारी के लिए आमंत्रित किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

सूचनाएँ :

यह पक्ष सदन प्रभारी या किसी अन्य शिक्षक द्वारा संपादित किया जाना चाहिए, जिन्हें विद्यार्थियों तथा विद्यालय से जुड़ी प्रासंगिक विभागीय सूचनाओं को दैनिक रूप से प्रस्तुत करना होता है। साथ ही विद्यालय के स्वस्थ शैक्षणिक माहौल हेतु इसी पक्ष के अंतर्गत विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ रेखांकित करते हुए उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों की हर रचनात्मकता तथा विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी होगी मंच से प्रोत्साहित करना इसी पक्ष का हिस्सा है। किसी पक्ष में हर सप्ताह होने वाली बालसभा तथा हर माह होने वाले विद्यालय की विभिन्न कार्यक्रमों की सूचना, नियमावली, पंजीकरण आदि की जानकारी भी शामिल है। इस पक्ष के अंत में आज का सवाल जैसा कोई रोचक प्रारूप जोड़ा जा सकता है, जिसे प्रतिदिन कक्षा विशेष के लिए पूछा जाए, यह प्रश्न संबंधित कक्षा के स्तर का ही हो, कभी-कभी इसमें समसामयिकी की को भी शामिल किया जा सकता है। इस सवाल के विजेता को प्रतिदिन एक पेन प्रोत्साहन के तौर पर पुरस्कार देकर इसे दैनिक रोचक फीचर के रूप में विकसित किया जा सकता है।

राष्ट्रगान :

प्रतिदिन प्रार्थना सभा का समापन राष्ट्रगान के माध्यम से करवाने से एक साथ कई मकसद हल होते हैं। सर्वोच्च उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्रीय दायित्व बोध के लिए उनकी जीवनशैली तैयार करना, दूसरा प्रार्थना सभा की तरह पूरी सुर ताल के साथ सामूहिक प्रारूप में अपनी राष्ट्रीय भावना को स्वर देना, तीसरा प्रार्थना सभा के बाद अपनी-अपनी कक्षाओं की ओर जाने के लिए पूरे विद्यालय का एक साथ खड़े होकर तैयार होना। राष्ट्रगान का संपादन भी सदन वार प्रतिनिधित्व के साथ किया जाए तथा राष्ट्रगान के बाद विद्यार्थियों को कक्षावार ड्रम्स की बीट्स के साथ कदमताल करते रहे प्रस्थान करने के आदेश दिए जाएँ। जब तक विद्यार्थी कक्षावार प्रारूप के अनुपालन करते हुए प्रस्थान कर रहे हों, प्राचार्य पूरे स्टाफ के साथ दो मिनट की एक खड़ी बैठक कर, उन्हें दिवस विशेष की प्राथमिकताएं, प्रार्थना सभा पर त्वरित टिप्पणी आदि की निरंतरता बनाकर प्रार्थना सभा को सर्वोच्च गरिमा प्रदान कर सकते हैं।

अवसर विशेष पर प्रार्थना सभा के प्रारूप में रचनात्मक बदलाव भी किया जा सकता है, किंतु प्रयास किया जाए कि प्रार्थना सभा को 15 से 20 मिनट में संपादित कर लिया जाए। अतिरिक्त गतिविधियों को जिस दिन जोड़ना हो उस दिन कुछ दैनिक नियमित गतिविधियों में से कटौती की जा सकती है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी दिन किसी शिक्षक के जन्मदिवस पर उन्हें शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए उनके हाथों विद्यालय में एक पौधा लगवाना है तो इस पक्ष को प्रार्थना सभा में ही प्रतीक रूप में संपादित करवा लिया जाए कि प्राचार्य उन्हें जन्मदिवस पर पूरे विद्यालय परिवार की ओर से एक पौधा भेंट करें, जिसे प्रार्थना सभा के बाद कुछ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के साथ संबंधित शिक्षक द्वारा लगवा लिया जाए। इस दिन संबोधन पक्ष संबंधित शिक्षक पर ही केंद्रित हो तथा उन्हें भी आभार ज्ञापित करने के लिए समय दिया जाए। इसी प्रकार अवसर विशेष पर पूर्व निर्धारित प्रारूप अनुसार प्रार्थना सभा को अतिरिक्त समय भी दिया जा सकता है ताकि उसमें संबंधित विशेष गतिविधि को संपादित किया जा सके। उदाहरण के तौर पर शिक्षक दिवस पर यदि विद्यार्थियों द्वारा सभी शिक्षकों का सम्मान आदि करने का रचनात्मक प्रारूप बने तो उस दिन अन्य कुछ पक्षों को छोड़कर इसमें शिक्षक दिवस विशेष की रचनात्मकता विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा डाली जा सकती है। इसी प्रकार सर्दियों में योग प्राणायाम तथा पीटी-डंबल को भी इस प्रारूप में शामिल कर इसे और ज्यादा प्रभावी एवं रचनात्मक बनाया जा सकता है।

एक अच्छी प्रार्थना सभा विद्यार्थियों के अलावा सभी शिक्षकों में भी टीम वर्क के साथ निरंतर नया करने की भावना को जागृत करती हुई विद्यालय की दिनचर्या की शुरुआत को ही प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर जाती है। इतना ही नहीं उपरोक्त प्रारूप में बहुत कुछ और भी शामिल किया जा सकता है तथा प्रार्थना सभा को विद्यालय की एकता, एकरूपता तथा प्रोत्साहन के मंच के रूप में एक दैनिक प्रेरक फीचर के रूप में तैयार करते हुए विद्यालय की ऊर्जा को नई दिशा दी जा सकती है।

प्राध्यापक, रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खोरी
रेवाड़ी, हरियाणा

शिक्षा एवं सुसंस्कारों का अनूठा संगम भिवानी का गिगनाऊ विद्यालय

"कवि कहता है कि आसमान में सुराख हो नहीं सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो"- दुष्यंत द्वारा लिखी गई इन पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए स्वतंत्रता सेनानी चौधरी जगराम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गिगनाऊ में सफलता की नई इबारत लिखी जा रही है। जिला भिवानी के लोहारू खंड में स्थित यह विद्यालय निरंतर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

विद्यालय में छात्र प्रतिभाओं को तराशने का कार्य वर्तमान समय में प्राचार्या श्रीमती विजय प्रभा के कुशल नेतृत्व में किया जा रहा है। इसके साथ-साथ विद्यालय में कार्यरत समस्त अध्यापक गण भी अपने उच्च कोटि के शिक्षण द्वारा छात्रों के भविष्य को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। श्रीमती विजय प्रभा के कार्य ग्रहण करने के बाद विद्यालय परिसर को नया रंग रूप दिया गया है। विद्यालय में हरा-भरा घास का एक मैदान तैयार किया गया है, जिसमें डहेलिया, गुलदाऊदी, गेंदा, गुलाब, मोगरा और सदा बहार जैसे अनेक फूलों की क्यारियाँ अपनी छटा बिखेर रही हैं। विद्यालय प्रांगण में प्रार्थना सभा एवं अन्य कार्यक्रमों जैसे योग क्रियाएँ, यज्ञ एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक ऑडिटोरियम नुमा शेड बनवाया गया है, जिसकी परिकल्पना एवं निर्माण करवाने में प्राचार्या श्रीमती विजय प्रभा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्राचार्य स्वयं एक समाज सेविका भी हैं। वे निरंतर समाज सेवी संस्थाओं और भामाशाहों को प्रेरित करती हैं, जो कि समय-समय पर विद्यालय में अनुदान देते रहते हैं। विद्यालय में वाटर कूलर, प्राचार्य कक्ष में एयरकंडीशनर, ऑडिटोरियम का चबूतरा, सोलर पावर सिस्टम, इनवर्टर बैटरी व कक्षा कक्षों में पंखे जैसी अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में इन्हीं का योगदान रहा है। सभी अध्यापकों के कठिन परिश्रम एवं सामूहिक योगदान से ही गत वर्षों में विद्यालय का दसवीं और बारहवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है और अनेक छात्रों ने दोनों ही कक्षाओं में प्रथम श्रेणी से परीक्षा उतीर्ण की है। लोहारू खंड में इस वर्ष किसी भी विद्यालय में सर्वाधिक छात्र नामांकन के लिए इस विद्यालय को 'जिला शिक्षा अधिकारी' श्री अजीत सिंह जी द्वारा सम्मानित किया गया है। जिसकी स्वयं श्री अजीत सिंह जी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

विद्यालय में छात्रों के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक कंप्यूटर लैब स्थापित है, जहाँ पर कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की जाती है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न भी यहीं साकार हो रहा है।

विद्यालय में सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम भी स्थापित किए गए हैं, जिसके माध्यम से विद्यालय के प्रतिभावान छात्र डिजिटल शिक्षा का लाभ ले रहे हैं। विद्यालय परिसर को सीसीटीवी कैमरों से भी लैस किया गया है, ताकि विद्यालय में छात्रों के लिए सुरक्षा का माहौल बना रहे। विद्यालय के छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए एक विशाल क्रीडा क्षेत्र भी सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में विकसित किया गया है। खेलकूद के क्षेत्र में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए यह संजीवनी बूटी है, क्योंकि प्राचार्या स्वयं खेल में विशेष रुचि रखती हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक भी जीते हैं। (2018-19) में मणिपुर में आयोजित नेशनल मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में विद्यालय की तीन अध्यापिकाओं विजय प्रभा, नीलम देवी और मनोज कुमारी ने विभिन्न स्पर्धाओं में पदक जीते। अभी इसी वर्ष (2021-22) में विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने कबड्डी, खो-खो, शॉटपुट एवं दौड़ स्पर्धा में खंड स्तर पर आल ओवर प्रथम स्थान प्राप्त किया और जिला स्तर पर भी विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। विद्यालय की तीन छात्राओं का चयन भी इस वर्ष राज्य स्तरीय गर्ल्स हॉकी की टीम में हुआ है, जो कि वास्तव में प्रशंसनीय है। विद्यालय में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों को शत-प्रतिशत निष्ठा से लागू किया जाता है, जिसका लाभ विद्यालय के छात्रों को मिलता है।

विद्यालय के यूथ एडवेंचर क्लब एवं स्काउट गाइड के प्रभारी संस्कृत प्रवक्ता नीलम देवी एवं भौतिक विज्ञान के प्रवक्ता संजय कुमार हैं। जिनके मार्गदर्शन में इस वर्ष आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों में विद्यालय के

छात्रों का प्रदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा है।

2021-22 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं प्रतिस्पर्धाओं में विद्यालय का प्रदर्शन-

विद्यालय यूथ एडवेंचर क्लब के प्रभारी संजय कुमार प्रवक्ता (भौतिक विज्ञान) ने पंचकूला में इस वर्ष 8 से 13 सितंबर तक आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। जो कि आने वाले वर्ष (2022- 23) में हरियाणा के विद्यालयों में एडवेंचर कार्यक्रमों से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आयोजित किया गया था।

आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय के दो छात्रों खुशी एवं हर्ष यूनम पीक पर जाने वाले पर्वतारोही दल के सदस्यों में शामिल थे, जिसे मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। यह पूरे लोहारू खंड के विद्यालयों के लिए एक गर्व का विषय है।

कल्चरल फेस्टिवल (2021-22) में लोक नृत्य, रागिनी प्रतियोगिता व सोलो नृत्य में खंड स्तर पर विद्यालय की छात्राएँ प्रथम स्थान पर रहीं। वहीं जिला

स्तरीय कार्यक्रम के एकल नृत्य में 12वीं कक्षा की छात्रा अन्नू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष नेशनल फोक डांस में रोलप्ले प्रतिस्पर्धा में भी जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में नौवीं कक्षा की छात्राओं ने भाग लिया और शानदार प्रदर्शन किया।

हरियाणा सरकार के अन्तरराष्ट्रीय गीता महोत्सव कार्यक्रम में भी इस वर्ष (2021- 22) में इस विद्यालय के छात्र खंड स्तर से लेकर जिला स्तर तक छाए रहे। विद्यालय के होनहार छात्र आनंद नेहरा ने पेंटिंग में, छात्रा कामना ने भाषण प्रतियोगिता में एवं श्लोक उच्चारण में विद्यालय की छात्रा नीतू का योगदान सराहनीय रहा। जिन्हें जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस वर्ष जिला स्तरीय एडवेंचर कैंप मल्लाह (पंचकूला) में विद्यालय के चार दिव्यांग छात्रों ने भाग लिया। सामान्य विंटर एडवेंचर फेस्टिवल (2021-22) में भी जिला स्तर और राज्य स्तर पर टिककर ताल व मल्लाह (पंचकूला) में आयोजित कैंप में विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं का प्रदर्शन सराहनीय रहा। वहीं नेशनल एडवेंचर फेस्टिवल जो कि हाल ही में 23 से 29 दिसंबर तक हिमाचल प्रदेश के मनाली में आयोजित किया गया था। इसमें विद्यालय के छात्रों ने ट्रैकिंग, बोटिंग, जेट स्कूटर, पैरासेलिंग, रोप क्लाइंबिंग, शूटिंग, तीरंदाजी सहित अनेक साहसिक गतिविधियों में भाग लिया। जिसकी जिला प्रभारी संस्कृत प्रवक्ता नीलम देवी रहीं। ये यूथ एडवेंचर की विद्यालय प्रभारी भी हैं।

राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित गणित के प्रवक्ता मदन लाल एवं जेबीटी अध्यापिका मनोज कुमारी भी इसी विद्यालय में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं, जो अपनी नवीन शिक्षण विधियों से विभिन्न विषयों में छात्रों को

शिक्षण प्रदान कर रहे हैं। जिसका लाभ विद्यालय के छात्रों को मिल रहा है। यह विद्यालय के लिए गर्व का विषय है। विद्यालय के परिसर को हरा-भरा रखने के लिए विद्यालय के सभी अध्यापक निरंतर वृक्षारोपण जैसे अभियान चलाते रहते हैं। परिणामस्वरूप विद्यालय में सैकड़ों की संख्या में फलदार व छायादार वृक्ष विद्यालय की शोभा बढ़ा रहे हैं। वृक्षारोपण के कार्य में क्षेत्र के सुंदरलाल बहुगुणा के नाम से प्रसिद्ध त्रिवेणी बाबा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जिन्होंने इस विद्यालय के साथ ही क्षेत्र के अन्य विद्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के स्थानों को हरा-भरा करने का बीड़ा उठाया हुआ है।

विद्यालय परिसर में साफ-सुथरा व पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाता है, जिसमें शुद्ध सात्विक एवं संतुलित भोजन के 16 प्रकार के व्यंजन अलग-अलग दिनों में परोसे जाते हैं।

विद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय भी है, जो भाषा, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान सहित अनेक प्रतियोगी पुस्तकों का साहित्य भंडार है। विद्यालय के सभी जिज्ञासु छात्र पुस्तकालय में बैठकर अपनी विषय संबंधी जिज्ञासा को शांत करते हैं। इस कार्य में पुस्तकालय के प्रभारी अर्थशास्त्र के प्रवक्ता विकास कुमार छात्रों को पुस्तकों की समस्त जानकारी प्रदान करते हैं।

अध्यापक अभिभावक संघ एवं स्कूल प्रबंधन समिति विद्यालय में सेतु के रूप में कार्य कर रही हैं। इनकी नियमित बैठकों में विद्यालय एवं छात्रों की सभी प्रकार की समस्याओं का निराकरण किया जाता है। विद्यालय में आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम में इनकी सहमति एवं भागीदारी आवश्यक की गई है। विद्यालय में छात्रों एवं समस्त स्टाफ के लिए पीने के स्वच्छ जल की समुचित

व्यवस्था है। जल संग्रहण एवं संरक्षण की भी विद्यालय में पूर्ण रूप से व्यवस्था है। वर्षा के जल को संग्रहण करने के लिए अंडर ग्राउंड वाटर टैंक बनाया गया है। विद्यालय के समस्त स्टाफ, छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग-अलग से शौचालय की समुचित व्यवस्था भी विद्यालय परिसर में उपलब्ध है।

निस्संदेह विद्यालय वर्तमान समय में अपनी उपयोगिता की सार्थकता को सिद्ध कर रहा है। ईश्वर करे कि यह विद्यालय एक वट वृक्ष की भाँति फलता-फूलता रहे, जिसकी शीतल छाया में भविष्य के निर्माता छात्र एवं छात्राएँ सुसंस्कारित एवं सुशिक्षित होकर देश हित में अपना योगदान देते रहें।

पवन कुमार
जेबीटी अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय
चुंगी नंबर- 7 लोहारू
जिला- भिवानी, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय विज्ञान अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो, प्रस्तुत हैं कुछ और नई विज्ञान गतिविधियाँ-

1.चुम्बकीय कार- मेरा खिलौना-

कक्षा आठ का विद्यार्थी मयंक एक कार बनाकर लाया जो चुम्बकीय बल से दौड़ती है। इसके लिए उसने आवश्यक सामान का इंतज़ाम आसपास से किया और कुछ पुराने खिलौनों के समान को भी प्रयोग किया। उसने दो शक्तिशाली स्पीकर्स की चुम्बकों में से एक को एक लकड़ी के गुटके के ऊपर इस प्रकार संयोजित किया कि समान ध्रुव एक तरफ रहें। उसने एक पुरानी खिलौना गाड़ी में से उसके चार पहिए निकाले। साइकिल के पहिए की तार (स्पोक) को गुटके पर कीलों से पिरो कर एक्सेल के रूप में तैयार किया और उन पर पहिये लगा दिए। इस प्रकार बनी इस कार को उसने काली टेप से कवर करके अपनी मनपसंद काले रंग की कार बनाई। अब वह दूसरे चुंबक की मदद से उस कार को ध्रुव बदल कर आगे और पीछे चला कर चुंबकीय बल का प्रयोग करना सीख गया है। वह अपने सहपाठियों को भी यह कार चला कर दिखाता है। सभी सहपाठी खुशी-खुशी उस कार से खेलते हैं और कक्षा-6 में पढ़े पाठ 'चुम्बकों द्वारा मनोरंजन' पाठ को पढ़ना साकार करते हैं।

2.बैलून हैलीकॉप्टर उड़ाया-

कक्षा-5 उत्तीर्ण कर के आए नए विद्यार्थियों का कक्षा-6 में स्वागत बैलून हेलीकॉप्टर उड़ा कर किया गया। यह एक बना बनाया विज्ञान खिलौना है जो कि एक साइंस किट में था। कक्षा-5 से माध्यमिक विभाग की कक्षा-6 में आने पर विद्यार्थियों को विज्ञान विषय रुचिकर लगे, इसलिए उन्हें दिन प्रतिदिन नई-नई विज्ञान गतिविधियाँ करके दिखाई जाती हैं। इससे उनकी रुचि जागृत हो सके और उन्हें भी खुद के बड़े हो जाने का एहसास हो सके। इस खिलौने में एक गुब्बारा है जिस में हवा भर के नॉजिल के द्वारा 3 पंखों से जुड़ी एक व्यवस्था में फिट किया जाता है। जैसे ही इसे छोड़ा जाता है गुब्बारे से हवा निकलती है जिससे पंख घूमते हैं। पंखों के घुमाव से उत्पन्न वायुदबाव में अंतर के कारण सारा निकाय (बैलून हेलीकॉप्टर) ऊपर उठता है। गुब्बारे में हवा खत्म हो जाने पर यह गुरुत्व बल के तहत नीचे जमीन पर आ गिरता है। विद्यार्थियों ने इस खिलौने की व्यवस्था में कई परिवर्तन करके देखे। गुब्बारे में अधिक हवा भरकर देखा क्या होता है? पंखों को उल्टी डायरेक्शन में लगा कर देखा और यह देखा कि ऐसा करने से क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

3.कंपनबाज लड़ाकू पत्तियाँ-

दो ढाई इंची कील को डैस्क पर 12 इंच दूरी पर गाड़ देते हैं। उसके ऊपर एक रबड़ बैंड टाइट करके चढ़ा देते हैं। रबड़ बैंड के बीच में क्रिसमस ट्री की दो छोटी पत्तियाँ तोड़कर उन्हें रखते हैं। दोनों तरफ की कीलों के हैड्स को दो विद्यार्थी पत्थरों से रगड़ते हैं जिससे कंपन उत्पन्न होता है। कंपन के कारण दोनों पत्तियाँ आगे की ओर बढ़ती हैं। कोई एक पत्ती दूसरी पत्ती को नीचे गिरा

देती है। विद्यार्थियों ने इस खेल का नाम कंपनबाज लड़ाके रखा। जब कीलों की कैप को तो पत्थर से रगड़ा जाता है तो उसमें कंपन उत्पन्न होता है। वह कंपन रबड़ बैंड में स्थानांतरित होता है, तत्पश्चात पत्तियों में। जिस कारण रबर बैंड के ऊपर रखी पत्तियाँ आगे की ओर बढ़ने लगती हैं। जिस साइड का कंपन अधिक होता है, वह पत्ती दूसरी पत्ती को नीचे गिरा देती है।

4.कागज की पट्टियों से बुनाई सीखना-

कक्षा-6 के विद्यार्थी बहुत उत्साहित हैं, उन्हें नित्य नई-नई विज्ञान गतिविधियाँ जो करनी हैं। विज्ञान पाठ-3 'तंतु से वस्त्रों तक' में कागज़ की पट्टियों से बुनाई सीखने के लिए उन्होंने सारे सामान के इंतज़ाम खुद किए हैं। अनन्या, अंशु, पूजा व शिवानी ने छात्राध्यापिका मोनिका दीदी की सहायता से दो रंगदार कागज़ों में से आधा-आधा इंच चौड़ी 12-12 पट्टियाँ काटीं। पाठ्य पुस्तक में चित्र देखकर बुनाई कैसे होती है, को सीखा व बुना। अब वे

समझ गए हैं कि जैसे उन्होंने कागज की पट्टियों को क्रमशः स्ट्रिप्स के नीचे-ऊपर से निकालकर बुनाई की है ठीक इसी प्रकार धागों की बुनाई करके वस्त्र बनाए जाते

हैं। हरिपुर काम्बोज क्लस्टर से एबीआरसी अंजू मैडम ने भी इस विज्ञान गतिविधि का अवलोकन किया व छात्राओं के प्रयासों को सराहा।

5.मेडिसन बॉल का विज्ञान-

गत दिनों विद्यालय में खेलों का बहुत सारा सामान आया है। इनमें काफी संख्या में एक किलोग्राम वजनी मेडिसन बॉल्स भी हैं। विद्यालय के शारीरिक शिक्षा के अध्यापक मेडिसन बॉल के उपयोग तरीके व लाभ इस प्रकार बताते हैं कि मेडिसन बॉल का विज्ञान बहुत जानकारियों से भरा है।

एक मेडिसिन बॉल का उपयोग आमतौर पर शारीरिक कोर स्ट्रेंथ बनाने के लिए किया जाता है, जिसमें मुख्य है पेट और पीठ में माँसपेशियों का निर्माण। यह उचित संरेखण के माध्यम से संतुलन, मुद्रा और समग्र विकार में मदद करता है। शरीर की शक्ति का निर्माण, शारीरिक तैयारी के लिए गति व गति सटीकता को बढ़ाती है। बहुमुखी प्रकृति के कारण पूरे शरीर को व्यायाम प्रदान करती है। माँसपेशियों की चोटों के बाद पुनर्वास प्रयास में सुधार लाती है। सहयोग के कौशल व टीम वर्क को बढ़ाने में मददगार है। विद्यार्थी इन एक किलोग्राम की मेडिसन बॉल से लाभान्वित हो रहे हैं।

आदरणीय अध्यापक साथियो! विद्यालय में उपलब्ध विज्ञान, गणित व स्पोर्ट्स के समान का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। यह विद्यार्थियों को सीखने में बहुत मददगार साबित होता है। सामान की प्रकृति तो टूटने फूटने की ही होती है। इसलिए वह इस्तेमाल होगा, तो टूटेगा जरूर। इसलिए हमें इस बात से नहीं घबराना चाहिए कि समान प्रयोग के दौरान टूट गया। अगले अंक में फिर मिलते हैं नई-नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड जगाधरी
जिला- यमुनानगर, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

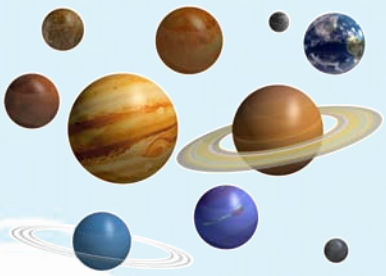

पहेलियाँ

(1) मैं हूँ एक ऐसा तारा,
धूप सभी को देता ।
सभी ग्रहों का मुखिया हूँ मैं,
तुमसे कुछ न लेता ।

(2) हरा नीला रंग है मेरा ,
मुझ पर सब है रहते।
मेरे आँगन में है जीवन
मुझको क्या है कहते?

(3) बच्चों का मैं प्यारा मामा
दुग्ध धवल सी मेरी काया,
घटता बढ़ता रहता हूँ मैं,
रूप सलोना मैंने पाया।

(4) रंग नहीं है रूप नहीं है,
किंतु अनेक नाम।
जीवन मेरे बिना असंभव है
हैं अनूठे काम ।

उत्तर 1-सूरज ,2-पृथ्वी 3-चंद्रमा 4-जल

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
राव गंज, कालपी, जालौन
उत्तर प्रदेश- 285204

ग्रह-उपग्रह प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1: सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले आकाशीय पिंडों को क्या कहते हैं?
(क) आकाशगंगा (ख) ग्रह (ग) उपग्रह (घ) उल्का
प्रश्न 2: चंद्रमा निम्नलिखित ग्रहों में से किस का एक उपग्रह है?
(क) बुध (ख) पृथ्वी (ग) मंगल (घ) प्लूटो
प्रश्न 3: कौन सा ग्रह सूर्य के सबसे निकट है?
(क) बुध (ख) बृहस्पति (ग) शनि (घ) मंगल
प्रश्न 4: सूर्य से दूरी के अनुसार हमारी पृथ्वी का कौन सा स्थान है?
(क) दूसरा (ख) तीसरा (ग) सातवाँ (घ) नौवाँ
प्रश्न 5: आकार की दृष्टि से घटते हुए क्रम में हमारी पृथ्वी का कौन सा स्थान है?
(क) तीसरा (ख) चौथा (ग) पाँचवाँ (घ) सातवाँ
प्रश्न 6: पृथ्वी को नीला ग्रह (ब्ल्यू प्लैनेट) क्यों कहा जाता है?
(क) पानी होने के कारण (ख) प्रदूषण होने के कारण
(ग) हवा होने के कारण (घ) लावा होने के कारण
प्रश्न 7: सौरमंडल का कौन सा ग्रह सूर्य से सबसे दूर है?
(क)बृहस्पति (ख) शनि (ग) प्लूटो (घ) यूरेनस
प्रश्न 8: किस ग्रह को ''वैक्यूम क्लीनर'' के नाम से भी जाना जाता है?
(क) पृथ्वी (ख) मंगल (ग) बृहस्पति (घ) शनि
प्रश्न 9: आकार की दृष्टि से सौरमंडल का कौन सा ग्रह सबसे बड़ा है?
(क) शनि (ख) मंगल (ग) प्लूटो (घ) बृहस्पति
प्रश्न 10: आकार की दृष्टि से सौरमंडल का कौन सा ग्रह सबसे छोटा है?
(क) शुक्र (ख) बुध (ग) प्लूटो (घ) मंगल
प्रश्न 11: सौरमंडल का कौन सा ग्रह पृथ्वी के सबसे निकट है?
(क) शुक्र (ख) मंगल (ग) बुध (घ) बृहस्पति
प्रश्न 12: कौन सा ग्रह शुक्र व मंगल ग्रहों के मध्य स्थित है?
(क) बुध (ख) बृहस्पति (ग) प्लूटो (घ) पृथ्वी
प्रश्न 13: सौरमंडल का सबसे ठंडा ग्रह कौन सा है?
(क) शुक्र (ख) प्लूटो (ग) बुध (घ) बृहस्पति
प्रश्न 14: किसी ग्रह के चारों ओर चक्कर लगाने वाले आकाशीय पिंडों को क्या कहते हैं?
(क) उपग्रह (ख) ग्रह (ग) उल्का (घ) धूमकेतु

उत्तर : 1.(ख) ग्रह 2.(ख) पृथ्वी 3.(क) बुध 4.(ख) तीसरा 5.(ग) पाँचवाँ 6.(क) पृथ्वी पर पानी होने के कारण 7.(ग) प्लूटो 8.(ग) बृहस्पति 9.(घ) बृहस्पति 10.(ग) प्लूटो 11.(क) शुक्र 12.(घ) पृथ्वी 13.(ख) प्लूटो 14.(क) उपग्रह

सीताराम गुप्ता,
एड़ी-106-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली-110034.

नया उजाला

हम बच्चे भविष्य निर्माता
हम सबकी ऊँची उड़ान है।

नई सुबह के हैं हम सूरज
नया उजाला फैलाएँगे,
झुंड बनाकर चिड़ियों जैसे
खेलेंगे, मन बहलाएँगे,

लेंगे सीख लगन से कौशल
दृढ़ इच्छा ऊर्जावान है।

हाथों में प्यारे-प्यारे से
रंगबिरंगे गुब्बारे हैं,
आँखों झिलमिल सपनों से
दमक रहे अनगिन तारे हैं,

खिलते पुष्प, झूमती तितली
हँसी-खुशी का कीर्तिमान है।
हम सबकी ऊँची उड़ान है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022

चिड़िया बोली

चोंच खोल कर चिड़िया बोली,
आओ-आओ-आओ।
लायी हूँ मैं चुन कर दाने,
खाओ-खाओ-खाओ।।
हलवा-पूड़ी-दही-जलेबी
आज नहीं मैं लायी।
थोड़े से अंगूर के दाने,
और एक नानखटाई।
अपना-अपना हिस्सा आकर,
पाओ-पाओ-पाओ।
लायी हूँ मैं चुन कर दाने,
खाओ-खाओ-खाओ।।
देखो-देखो शाम हो गई
खा लो तब ही सोना,
घास के कोमल रेशे चुनकर
गुलगुल किया बिछौना।
जिसको भी सोना हो सोने
जाओ-जाओ-जाओ।
लायी हूँ मैं चुन कर दाने
खाओ-खाओ-खाओ।।

वसीम अहमद 'नगरामी'
कला शिक्षक
आरएनजे इंटर कॉलेज
10/42, नगराम बाज़ार,
लखनऊ- 226303

जैसी करनी वैसी भरनी

एक जंगल में एक हाथी ने काफी उत्पात मचा रखा था। वह प्रतिदिन कुछ न कुछ क्षति जीव-जंतुओं की करता रहता था। एक दिन उसने मस्ती में एक पेड़ की डाल तोड़ डाली और इसमें बना गौरैया का घोंसला टूट गया तथा उसके सारे अंडे टूट गए। गौरैया का रोना - धोना सुनकर एक कठफोड़वा वहाँ आया और बोला -क्या बात है भाई? गौरैया ने कठफोड़वे को सारी बात बताई। कठफोड़वा बोला, चलो हम मधुमक्खी की सलाह लेते हैं और वे मधुमक्खी के पास गए। सारी बात सुनकर मधुमक्खी ने मेंढक से सलाह लेने की बात कही। सारे मिलकर मेंढक के पास पहुँचे। सारा वृत्तांत सुनकर मेंढक बोला, यदि हम सब एकजुट होकर काम करें तो निश्चित रूप से हम हाथी से छुटकारा पा सकते हैं। मेंढक ने कहा, मक्खी तुम हाथी के पास जाना और उसके कानों में मीठी-मीठी धुन सुनाना। जब वह धुन में मस्त होकर अपनी आँखें बंद कर ले, तब कठफोड़वा उसकी आँखें फोड़ देगा। जिससे वह प्यास से तड़पता पानी की खोज करेगा। तब मैं दलदल में जाकर टर्र-टर्र करूँगा और वह पानी की तलाश में दल-दल के पास जाएगा और उसमें फँस कर मर जाएगा। चारों की सलाह कामयाब रही और हाथी दल-दल में फँस कर मारा गया।

शिक्षाः दुष्कर्मों से बचना चाहिए अन्यथा करनी का फल हमें भुगतना पड़ेगा।
अथवा एकता में बल है।

नीलम देवी
संस्कृत प्रवक्ता
रावमावि गिगनाऊ
खंड लोहारू, जिला भिवानी, हरियाणा

गज़ब की नृत्यांगना है छात्रा अन्नू

यह कहा जाता है कि प्रत्येक बच्चे में जन्मजात कोई न कोई प्रतिभा छिपी होती है और यह प्रतिभा ईश्वर की नैसर्गिक देन होती है। बच्चा जब धीरे-धीरे बड़ा होता है, तो यह प्रतिभा निखर कर सामने आने लगती है। विद्यालय स्तर पर स्वयं छात्र को भी अपनी इस ईश्वरीय देन का आभास होने लगता है। अतः विद्यालय स्तर पर छात्रों में पाई जाने वाली बहु आयामी प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें तराशने का काम अध्यापकों का ही है।

स्वतंत्रता सेनानी चौधरी जगराम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गिगनाऊ खण्ड लोहारू, जिला भिवानी में कक्षा 12वीं की छात्रा अन्नू भी एक ऐसी ही बहुआयामी कला की धनी छात्रा है। नृत्य कला में विशिष्ट महारत रखने वाली यह छात्रा भिवानी जिले के लोहारू खंड में एक छोटे से गाँव गोठड़ा में एक बहुत साधारण से परिवार में पली-बढ़ी है। प्राथमिक स्तर से ही विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों के दौरान अन्नू का रुझान नृत्य एवं गायन में रहा है। धीरे-धीरे गायन एवं नृत्य में अन्नू की रुचि बढ़ती गई। अन्नू की इस अद्भुत कला को विशेष रूप से पहचान दिलाने का श्रेय विद्यालय की प्राचार्या विजय प्रभा को जाता है, जिन्होंने अन्नू की इस नृत्य प्रतिभा को समय पर पहचाना और विद्यालय में होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जैसा कि कहा जाता है कि हीरे की परख तो केवल जौहरी ही कर सकता है। अतः इस उक्ति को सार्थक सिद्ध करते हुए अन्नू ने विद्यालय स्तर से लेकर जिला एवं राज्य स्तर तक की अनेक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया और विद्यालय एवं अपने माता पिता का नाम रोशन किया । जब वह पूर्ण रूप से सकारात्मक ऊर्जा के साथ विभिन्न मुद्राओं एवं भाव-भंगिमाओं में नृत्य प्रस्तुत करती है तो दर्शक भाव विभोर होकर झूमने लगते हैं। प्रत्येक प्रस्तुति के साथ अन्नू की नृत्य कला में और अधिक निखार आता जा रहा है।

अन्नू ने इस वर्ष (2021-22) में जिला स्तर से लेकर राज्य स्तर तक विभिन्न एडवेंचर कैंपों में अपने नृत्य का शानदार प्रदर्शन किया है। इसी वर्ष में मनाली में आयोजित नेशनल एडवेंचर कैंप में भी अपनी नृत्य कला का लोहा मनवाया। अन्नू के नृत्य से भाव विभोर होकर स्वयं कार्यक्रम अधिकारी, राम कुमार ने भी अन्नू के प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसे प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस वर्ष के कला उत्सव हों या कल्चरल फेस्ट, अन्नू ने दोनों प्रतियोगिताओं में जिला स्तर पर शानदार प्रदर्शन करके विद्यालय का नाम रोशन किया। कल्चरल फेस्ट में एकल नृत्य प्रतियोगिता में वह जिला स्तर पर प्रथम स्थान पर रही, जिसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी श्री अजीत सिंह जी ने उसे प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

अन्नू अपनी नृत्य कला में और अधिक विशिष्टता लाने के लिए प्रतिदिन सुबह एक घंटा योग व प्राणायाम भी करती है। स्वयं अन्नू के शब्दों में, नृत्य एक ऐसी कला है जिसमें नृत्य के साथ सुर और ताल का समन्वय होना अति आवश्यक है। योग एवं प्राणायाम मन की एकाग्रता को बनाए रखता है इसलिए नृत्य में एकाग्रता का बहुत अधिक महत्त्व है।

विद्यालय के सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के अतिरिक्त अन्नू पढाई में भी पीछे नहीं है। वह हर कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करती है। अन्नू का सपना है कि वह भारतीय सेना में भर्ती होकर अपने माता पिता और देश का गौरव बढ़ाए। वह एक उत्कृष्ट नृत्यांगना होने के साथ-साथ एक अच्छी गायिका भी है। स्वाभाविक रूप से नेतृत्व के गुण स्टेज के माध्यम से ही विकसित होते हैं।

अन्नू के बारे में विद्यालय की प्राचार्या विजय प्रभा का मानना है कि वह आज के दौर में अन्य लड़कियों की भाँति लड़कों से हर क्षेत्र में आगे है। हमें यह सोचकर बहुत हर्ष होता है कि अन्नू हमारे विद्यालय की छात्रा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी कलाकार को यदि उचित समय पर सही मार्ग-दर्शन मिल जाए तो ये अपने जीवन में अलग पहचान बनाकर नई बुलंदियों को छू सकती हैं।

नीलम देवी, प्रवक्ता संस्कृत,
स्व. से. चौ. जगराम रावमा विद्यालय गिगनाऊ
खण्ड लोहारू, जिला भिवानी, हरियाणा

रचनात्मक शैली की धनी हैं ज्योति

इंसान की पहचान उसके कर्म व समर्पण से होती है। अपनी विशिष्ट कार्यशैली से कोई भी इंसान जब कुछ करने में जुट जाता है उसे पता भी नहीं चलता कि वह इस समाज के निर्माण कितना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। कुछ ऐसा ही कारनामा कर दिखाया है राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला राजापुर (पानीपत) की मुख्य शिक्षिका ज्योति चोपड़ा ने। अपनी रचनात्मक व क्रियात्मक कार्यशैली की बदौलत उन्होंने अपने शिक्षण को ही प्रभावी नहीं बनाया है, अपितु विद्यालय सौंदर्यीकरण से लेकर शिक्षा विभाग की तमाम गतिविधियों में उनका अतुलनीय योगदान रहता है। जिला प्रशासन पानीपत द्वारा आयोजित गीता जयंती, गणतंत्र व स्वतंत्रता दिवस समारोह में उनकी कला को नज़दीक से देखा जा सकता है। सरकारी शिक्षण कार्य में वर्ष 1997 से शुरुआत करने वाली मुख्य शिक्षिका ज्योति चोपड़ा ने सदैव मेहनत को अपनाए रखते हुए सराहनीय कार्य किया है। वर्तमान पाठशाला में 2016 में कार्यभार ग्रहण करने के तुरंत बाद विद्यालय सुधार व सौंदर्यीकरण के साथ साथ शिक्षा सुधार पर विशेष ध्यान दिया जिसके परिणाम स्वरूप निरंतर छात्र संख्या में बढ़ोतरी होती गई। अपनी कला अभिरुचि से ज्योति चोपड़ा ने पाठशाला में स्मार्ट क्लास रूम तैयार किया जिसमें अपनी चित्रकला से उसमें रंग भर उसे सुंदर बनाया। जिसकी सराहना निवर्तमान उपायुक्त पानीपत सुश्री सुमेधा कटारिया ने की। पेपर क्राफ्ट में विशेष रुचि रखने वाली मुख्य शिक्षिका ज्योति चोपड़ा ने प्रवेश उत्सव 2022 के लिए पाठशाला में एक सेल्फ़ी प्वाइंट बनाया। जहाँ बच्चों व अभिभावकों ने खूब सेल्फ़ी ली, जो विशेष आकर्षक का केंद्र बना। इसके साथ ही उन्होंने अपनी टीम के साथ खंड स्तरीय एफएलएन कार्यशाला के लिए डाइट पानीपत परिसर में चार कमरों को सजाया, जिसकी शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने खूब प्रशंसा करते हुए शाबाशी व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। जिला स्तरीय गीता जयंती में सरस्वती उद्गम स्थल व मनमोहक रंगोली बनाने में योगदान पर श्री अश्विनी चोपड़ा पूर्व सांसद करनाल, डॉ.चंद्रशेखर खरे तत्कालीन उपायुक्त पानीपत व श्री राजीव मेहता तत्कालीन एडीसी पानीपत ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इनके योगदान से वर्ष 2021 में शिक्षा विभाग की झांकी को जिला स्तर पर द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए करती हैं प्रयास।

मुख्य शिक्षिका ज्योति चोपड़ा का कहना है कि उनका मुख्य उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी दिशा में कार्य करते हुए स्वयं रंग व ब्रश के साथ विद्यालय में पेंटिंग बनाती हैं। मुख्य शिक्षिका के कर्तव्य को पूरा करते हुए वो विद्यालय विकास में बढ़-चढ़ कर योगदान देती हैं। बच्चों का पढ़ने में मन लगे व विद्यालय में ठहराव बनाने के लिए अपने विद्यालय के अध्यापक अध्यापिकाओं के साथ टीम भावना से कार्य करती हैं। मिलनसार व्यक्तित्व और कर्मठता इनकी पहचान है। शिक्षा विभाग की ज्यादातर गतिविधियों में इनका सहयोग जिला शिक्षा विभाग को मिलता रहता है।

समर्पण व मेहनत की पर्याय हैं ज्योति - प्राचार्या इंदुबाला।

प्राचार्या इंदुबाला का कहना है कि ज्योति चोपड़ा स्वयं तो मेहनत करती ही हैं, इसके साथ-साथ अपने जेबीटी अध्यापकों की टीम को भी साथ लेकर चलती हैं। इनके द्वारा किए गए प्रयासों का अन्य विद्यालयों में भी अनुसरण किया जाता है। इनके सफल व उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ बधाई।

प्रदीप मलिक
कला शिक्षक
रावमा विद्यालय इसराना, पानीपत, हरियाणा

सेवानिवृत्ति के बाद भी बाल हित में पसीना बहा रहे गुरु जी बाल कृष्ण यादव

22 फरवरी, 1994 को शिक्षा विभाग में बतौर गणित शिक्षक पदार्पण करने वाले गुरु जी बालकृष्ण यादव 30 नवंबर 2021 को सेवानिवृत्त हो चुके है। सेवा भाव के साथ काम करने वाले गुरुजी आज भी स्कूल आकर बच्चों को गणित विषय का ज्ञान प्रदान कर रहे है। 15 नवंबर, 1963 को जिला रेवाड़ी के करावरा मानकपुर ग्राम में जन्मे बाल कृष्ण ने प्राथमिक शिक्षा गाँव के ही सरकारी स्कूल से प्राप्त कर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से दो विषयों में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त कर तीन दशकों की उत्कृष्ट सेवा उपरांत भी नियमित रूप से विद्यालय पहुँच कर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है।

11 वर्ष सिरसा जिले में तथा 12 वर्ष गुरुग्राम जिले में गणित अध्यापक के तौर पर कार्य करते हुए सन 2017 से लगातार राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में रहते हुए मन, वचन, कर्म से एक सच्चे सिपाही की भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने लंबे सेवाकाल के दौरान अध्यापन कार्य करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया। उनके शिक्षण कार्य के दौरान उनकी अनुशासन प्रियता, सादगी, धीरता, उदारता, शिष्टता, विषय में निपुणता एवं सहयोग की भावना, आध्यात्मिकता आदि सद्गुणों ने सभी के दिल में सम्मानित स्थान बना लिया। उनके गुणात्मक शिक्षण-कार्यों तथा सादा जीवन उच्च विचार के पर्याय के रूप में सदैव विद्यार्थियों एवं संस्था के हित में कार्य करते हुए एक सच्चे शिक्षक की भूमिका निभाई है।

मुकेश कुमार
अंग्रेजी अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

सदन प्रक्रियाः प्रारूप एवं क्रियान्वयन

विद्यालय की दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पाठ्येतर गतिविधियों के कुशल संचालन के लिए विद्यालय में एक सक्रिय सदन प्रक्रिया बेहद जरूरी है। विद्यालय के सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को चार संतुलित भागों में बाँट कर एक ओर जहाँ विद्यालय में अंतर्सदनीय प्रतिस्पर्धा का रचनात्मक माहौल तैयार किया जा सकता है, वहीं हर सप्ताह एक सदन विद्यालय की प्रार्थना सभा से लेकर बालसभा तक के सभी प्रभार संभालकर विद्यालय की रचनात्मकता को और ज्यादा समृद्ध कर सकता है। इस प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए विद्यालय की मुखिया को सबसे पहले चार सदन प्रभारियों को चयनित कर संबंधित उद्देश्यों पर विमर्श करना होगा। फिर सभी शिक्षकों को इस तरह से चारों सदन में विभाजित किया जाए कि सदन की विभिन्न गतिविधियाँ के संपादन के लिए चार संतुलित टीमें में बन सकें। विद्यार्थियों को भी इसी उद्देश्य से अनुक्रमांक के आधार पर सदन अलॉट किए जाएँ। सदन के शिक्षक प्रभारी की भाँति छात्र व छात्रा प्रभारी का चयन भी सदन प्रभारी तथा सहयोगी मिलकर करें। किस सप्ताह का प्रभारी कौन सा सदन होगा, यह भी सूचित कर दिया जाए। चारों सदनों के नामकरण में भी एकरूपता हो। सदन का नाम महापुरुषों, वैज्ञानिकों, पर्वत शृंखलाओं, नदियों आदि के नाम पर रखा जा सकता है। नामकरण के अनुसार ही सदन के झंडों के प्रारूप व रंग निर्धारित किए जाएँ। सदन प्रक्रिया में यह भी सुनिश्चित किया जाए कि दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक कार्यक्रमों के अलावा राष्ट्रीय पर्वों, वार्षिक-उत्सव तथा अन्य समसामयिक कार्यक्रम की मेजबानी, वही सदन करे जिसकी प्रभार के अंतर्गत संबंधित आयोजन आए। उदाहरण के तौर पर 'शिक्षक-दिवस' सितंबर में होता है। वस्तुतः इसके संयोजन संपादन व संचालन का प्रभार पहले सदन के पास रहेगा, क्योंकि यह प्रथम सप्ताह में आ रहा है। इसी प्रकार स्वतंत्रता दिवस समारोह की मेजबानी दूसरा सदन तथा गणतंत्र दिवस समारोह का संयोजन चौथा सदन करेगा। इसी प्रकार अन्य कार्यक्रमों के लिए मेजबानी व संयोजन का दायित्व स्वतः ही निर्धारित हो जाएगा।

सदन प्रक्रिया के कुशल संयोजन के लिए संगठन के बाद सदन बैठकों का होना जरूरी है, जिनमें सदन प्रभारी तथा अन्य शिक्षकों द्वारा विस्तार से सदन प्रक्रिया के दौरान होने वाली विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा देने के अलावा विभिन्न गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों की प्रतिनिधि टीमों का चयन करना भी जरूरी है। इसी प्रकार बीच-बीच में सदन की समीक्षा बैठक भी सदन प्रक्रिया की दशा और दिशा को विद्यार्थियों तथा संस्था हित में ले जाने के लिए जरूरी है। वार्षिक उत्सव, वार्षिक खेल उत्सव, मासिक कार्यक्रमों, विज्ञान मेलों, कला प्रदर्शनियों आदि में संयोजक भले ही सदन विशेष हो, किंतु इसमें सभी सदन के झंडों तथा प्रतिनिधियों को उचित स्थान एवं सम्मान दिया जाए ताकि अनेकता में एकता की सर्वोच्च विशेषता का संदेश विद्यार्थियों को व्यावहारिकता से समझाया जा सके। विद्यालय के मुखिया को चारों सदन के संरक्षक के रूप में सम्मान दिया जाए तथा वे स्वयं चारों सदन का संरक्षण एवं उत्साहित करने के दायित्व को आगे बढ़कर निभाएँ। सदन प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि सदन का हर विद्यार्थी किसी ने किसी प्रकल्प में अवश्य शामिल किया जाए, ताकि विद्यार्थियों में अपने सदन के प्रति लगाव के साथ-साथ प्रतिनिधित्व के गुण पैदा हो सकें।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी
रेवाड़ी, हरियाणा

सिर्फ दो गिलास पानी

गर्मी का मौसम आया नहीं कि पक्षी अपनी चोंच को खोले हुए अक्सर दिखाई देने लगते हैं। आप भी अपने आसपास अनेक ऐसे पक्षियों को देखते होंगे। इन पक्षियों में मनुष्य की भाँति पसीने की ग्रंथियाँ नहीं होती हैं। इस कारण उनके शरीर से पसीना नहीं निकलता। इसका नुकसान यह होता है कि पसीने के कारण बाहरी हवा से जो ठंडक मिलती है, उससे ये पक्षी वंचित रह जाते हैं। एक फायदा जरूर हाता है कि शरीर के अंदर के पानी का नुकसान नहीं होता। आप कल्पना कीजिए कि सूखते जलस्रोत और कटते वृक्षों का इन पक्षियों के जीवन पर कितना बुरा असर पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में अपने पंख फैलाकर हवा को सीधे त्वचा से छुवाकर पक्षी कुछ ठंडक तो ले लेते हैं, लेकिन यह उनके लिए जानलेवा भी हो सकती है। पक्षियों की चोंच के नीचे की ओर गर्दन की माँसपेशियों की एक अहम भूमिका होती है। साँस लेने के दौरान जब गर्म हवा चोंच से भीतर जाती है तो ये दोनों जगह की माँसपेशियों में उपस्थित नमी इस हवा को ठंडा कर देती है। इससे पक्षियों को कुछ राहत मिलती है। लेकिन कब तक? आखिर भयावह गर्मी में कुछ समय बाद इन माँसपेशियों को भी सूखना ही है। ऐसे में पक्षियों का जीवन तो खतरे में पड़ना निश्चित है। खास बात यह है कि पक्षियों की गर्मी में साँस लेने की दर भी प्रतिमिनट बढ़ जाती है। ऐसे में खतरा और अधिक बढ़ जाता है।

हमें इंसान होने का धर्म निभाते हुए भरी गर्मी में इनके लिए पानी की व्यवस्था करनी है, ताकि ये भी अपना पूरा जीवन जी सकें। वैसे पक्षी पानी की कमी से बचने के लिए स्वयं भी कुछ न कुछ करते रहते हैं। ज्यादा देर छाँव में रहना, गतिविधियों को नियंत्रित करना, अवसर मिलने पर पानी में नहा लेना आदि। एक और विशेष बात यह भी है कि गर्मियों में अधिकतर पक्षियों का प्रजनन समय होता है। ऐसे में अपने बच्चों के लिए भोजन की तलाश में इन्हें निकलना पड़ता है। अगर हम अपने घर के आसपास या छत पर किसी बर्तन में इनके लिए पानी रख दें, तो भीषण गर्मी में अनेक पक्षियों की जान बच सकती है। ज्यादा नहीं, केवल दो गिलास पानी प्रतिदिन। **(चित्र में दिख रहे पक्षी गाय बगला/कैटल एग्रेट हैं।)**

लोकेंद्र सिंह चौहान
बर्ड वॉचर व पक्षी प्रेमी
झाबुआ, मध्यप्रदेश

2022

मई-जून माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 मई- अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस
3 मई- ईद-उल-फितर /परशुराम जयंती
11 मई- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
12 मई- अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस
16 मई- बुद्ध पूर्णिमा
21 मई-आतंकवाद विरोधी दिवस
2 जून- महाराणा प्रताप जयंती
3 जून- गुरु अर्जन देवा शहीदी दिवस
11 जून- संत कबीर जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The bacteria in your gut may reveal your true age

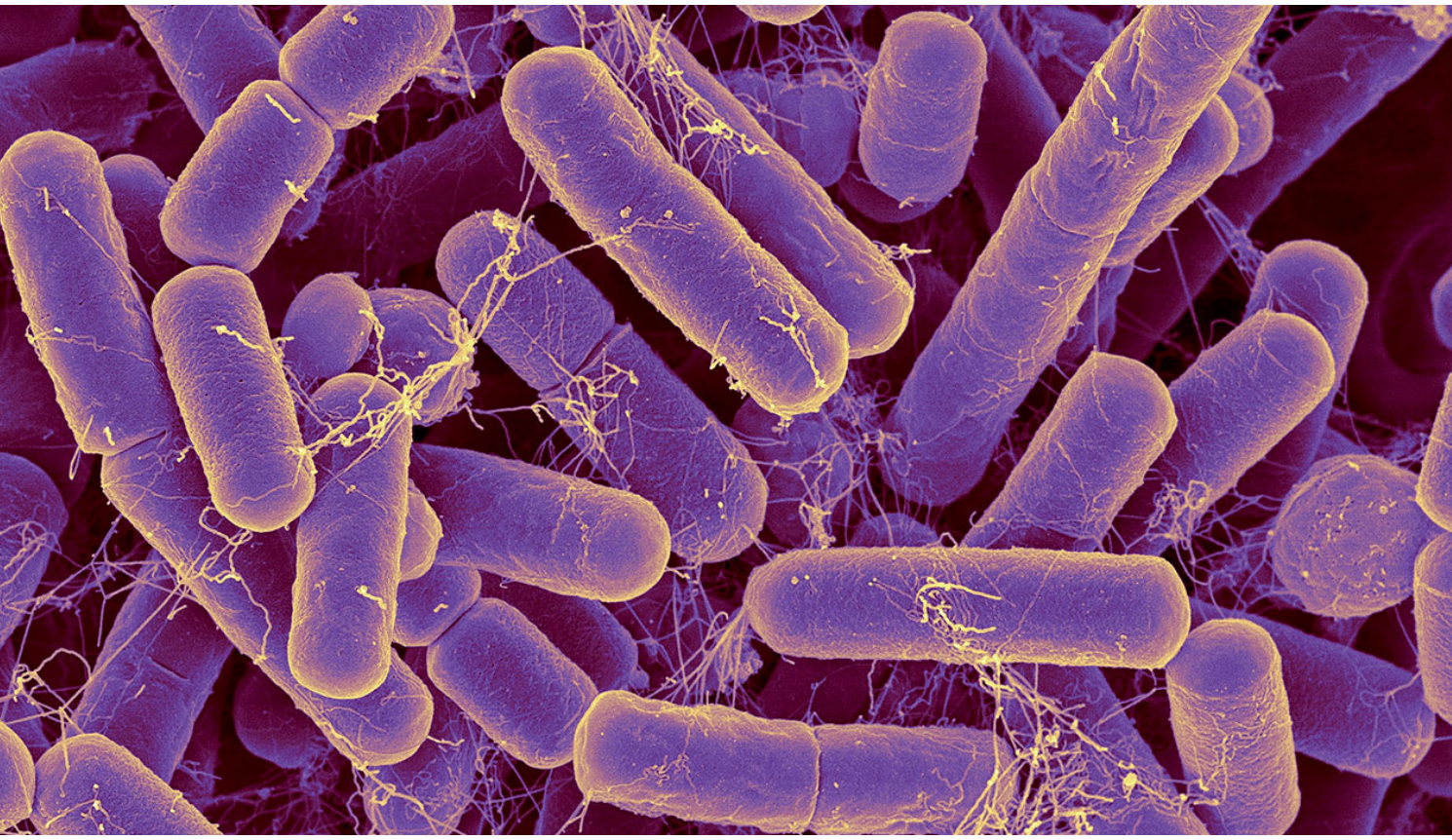

Bacteroides are the most common bacteria species found in the human intestinal tract. The billions of bacteria are present in our gut home may help regulate everything from your ability to digest food to how your immune system functions. But scientists know very little of how that system, known as the microbiome, changes over time—or even what a "normal" one looks like. Now, researchers studying the gut bacteria of thousands of people around the globe have come to one conclusion: The microbiome is a surprisingly accurate biological clock, able to predict the age of most people within years.

To discover how the microbiome changes over time, longevity many researchers – based artificial intelligence startup, examined more than 3600 samples of gut bacteria from 1165 healthy individuals living across the globe. Of the samples, about a third were from people aged 20 to 39, another third were from people aged 40 to 59, and the final third were from people aged 60 to 90.

The scientists then used machine learning to analyze the data. First, they trained their computer program—a deep learning algorithm loosely modeled on how neurons work in the brain—on 95 different species of bacteria from 90% of the samples, along with the ages of the people they had come from. Then, they asked the algorithm to predict the ages of the people who provided the remaining 10%. Their program was able to accurately predict someone's age within 4 years. Out of the 95 species

of bacteria, 39 were found to be most important in predicting age.

Some microbes became more abundant as people aged, like Eubacterium hallii, which is thought to be important to metabolism in the intestines. Others decreased, like Bacteroides vulgatus, which has been linked to ulcerative colitis, a type of inflammation in the digestive tract. Changes in diet, sleep habits, and physical activity likely contribute to these shifts in bacterial species.

"Microbiome aging clock" could be used as a baseline to test how fast or slow a person's gut is aging and whether things like alcohol, antibiotics, probiotics, or diet have any effect on longevity. It could also be used to compare healthy people with those who have certain diseases, like Alzheimer's, to see whether their microbiomes deviate from the norm.

If the idea is validated, it would join other biomarkers scientists use to predict biological age, including the length of telomeres—the tips of chromosomes implicated in aging—and changes to DNA expression over a person's lifetime. Combining the new aging clock with these others could yield a much more accurate picture of a person's true biological age—and health. It could also help researchers better test whether certain interventions—including drugs and other treatments—have any effect on the aging process. You don't need to wait until people die to conduct longevity experiments.

According to microbio researchers predicting someone's age based on their gut microbiome is very plausible and of tremendous interest to study aging. A Group of scientist are analyzing 15,000 samples from the American Gut Project, a worldwide microbiome study founded, to develop similar age predictors.

But one of the challenges of developing such a clock, is that there are huge differences in which bacteria are present in the guts of people around the world. "It's extremely important to replicate these kinds of studies with markedly different populations" to find out whether there are distinct signs of aging in different groups of people.

It's also not known whether changes in the microbiome cause people to age more rapidly, or whether the changes are simply a side effect of aging. InSilico Medicine is building several aging clocks based on machine learning that could be combined with the microbiome one. Age is such an important parameter in all kinds of diseases.

Savita Ahlawat
Subject Expert Biology
SCERT Haryana, Gurugram

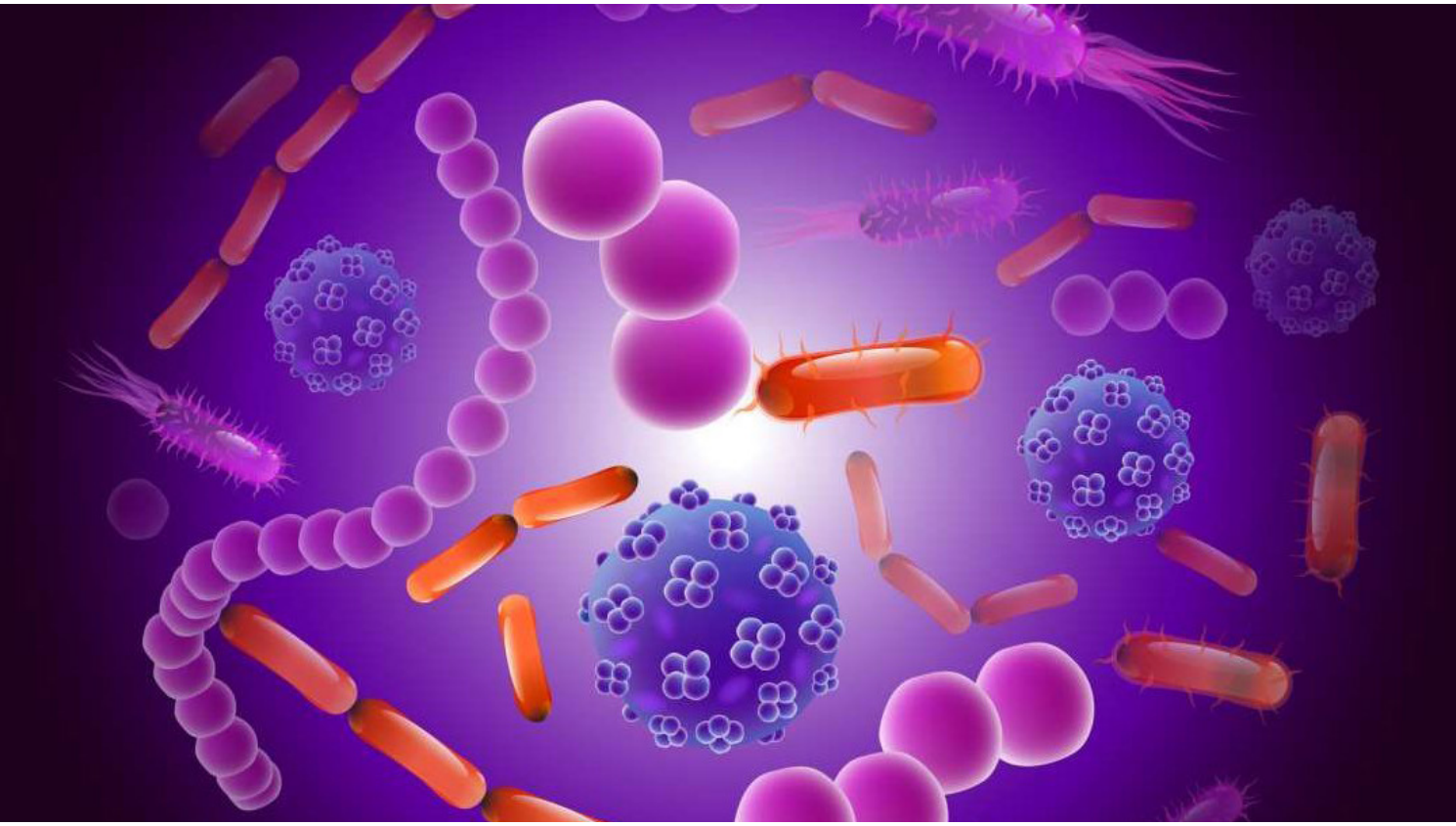

THE CRISPR TECHNOLOGY

The blue print of 2nd Green Revolution

CRISPR Technology

The revolution began in 2012 with the discovery of CRISPR (clustered regularly interspaced short palindromic repeats) – Cas (CRISPR-associated protein) by Emmanuelle Charpentier and Jennifer A. Doudna. CRISPR systems, which form an adaptive immune system in bacteria, have been modified for genome engineering. These two scientist were rewarded in 2020 with the Nobel Prize in Chemistry "for the development of a method for genome editing" mechanism i.e. CRISPR-Cas. Prior to CRISPR, genome engineering approaches like zinc finger nucleases (ZFNs) or transcription-activator-like effector nucleases (TALENs) required scientists to design and generate a new nuclease pair for every genomic target. Due to its comparative simplicity and adaptability, CRISPR has rapidly become the most popular genome engineering approach.

CRISPR in Agriculture

From green revolution now the gene editing revolutionizes the agricultural sector and become a potential tool for food security of the growing population. This can lead to enhancement in productivity, nutritional quality of produce and climate adaptation, thereby ensuring sustainability of production systems and nutritional security for the underprivileged.

Milestone in Development of Crops by CRISPR

1. **CRISPR tomatoes:** wild and ground cherry: To create compact plants with less sprawling bushes, larger fruits that can ripen at the same time, higher vitamin C levels, resistance to bacterial spot disease, fruits that stay attached to their stem better, resistance to salt, and more.
2. **CRISPR mushrooms:** stop them from browning: To alter the white button mushroom, preventing it from browning quickly and elongating its shelf life.
3. **CRISPR rice:** improving the yield: To improve crop yields in rice, a staple food for a significant number of the world's population, yet one that is overly susceptible to negative environmental factors
4. **CRISPR citrus fruits:** saving the oranges from greening: Oranges and other citrus foods are at risk from decimation due to the "citrus

greening" disease. CRISPR could create a resistance to this disease, and save the industry which is at a complete risk of collapse.

5. **CRISPR chocolate:** saving the cacao trees: To modify the cacao plant to equip it with enhanced resistance to diseases, and ultimately to prevention eventual extinction.
6. **CRISPR wheat:** removing the gluten: To create strands of wheat that does not contain gluten, allowing those with Celiac Disease to consume wheat varieties without immune-reactivity.

CRISPR Technology solving the Agriculture Constraints: CRISPR advancements in agriculture provide a safe way for humans to combat the dozens of threats targeting their crops and production. Here are the main problems the application of CRISPR science can begin to solve in the world of agriculture:

Resistance to the environment

- **Weather resistance -** CRISPR can make plants more resistant to rain, wind, and storms, which would help increase yields at season end.
- **Drought resistance -** Similar to too much rain, not enough water causes many plants and livestock to be lost. Drought-resistant organisms would increase yields.
- **Pest resistance -** Insects and other pests destroy many crops; small changes in the genetic makeup of a plant could prevent it from coming to harm because of its regular pests.
- **End global use of pesticides -** Pesticides also release harmful toxins that poison certain organisms while trying to protect others. With CRISPR, we could end or significantly limit the amount of pesticides that are used.

Improve produce longevity and nutrition, Helping those with allergies and sensitivities enjoy food, Counter the effects caused by global warming, Helping mankind physically and economically

Status of CRISPR technology in India:- In India, the Department of Biotechnology (DBT) and the Indian Council of Agricultural Research (ICAR) have recognised the enormous potential of gene-editing technology. The DBT's National Agri-Food Biotechnology Institute, Mohali (Punjab), was among the first in India to use CRISPR/Cas9 to carry out a change in the phytoene desaturase (fruit ripening) gene of banana cv Rasthali. ICAR institutes are involved in application of CRISPR technology for enhancing stress tolerance and nutritional quality in a number of crops. To harness the benefits of international advances in CRISPR technology for crop improvement, the ICRISAT (India) has signed a Master Alliance Agreement with Corteva AgriScience to provide access to CRISPR-related resources to the ICRISAT. Corteva AgriScience holds the licence for MIT and Harvard CRISPR technologies.

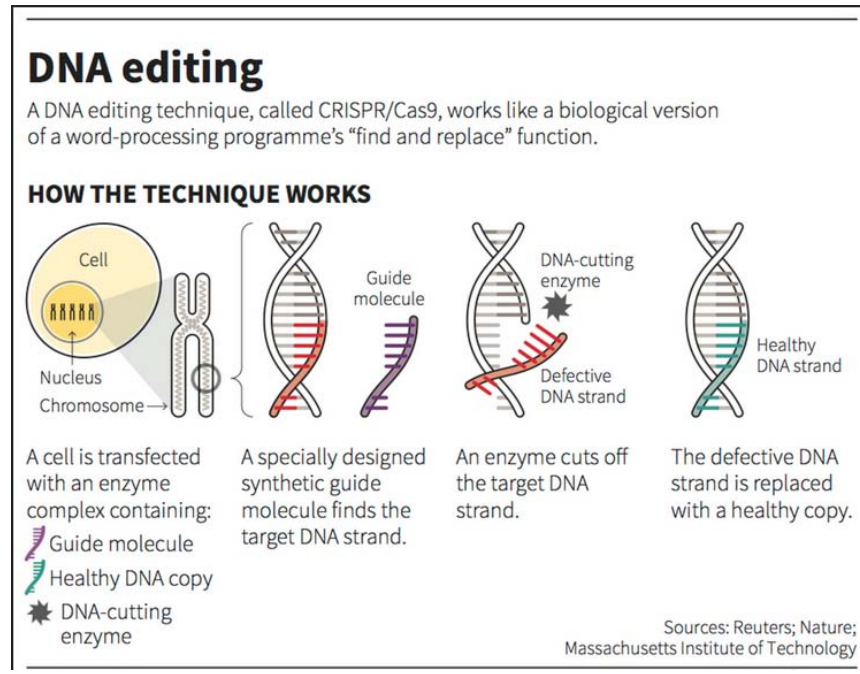

Fig-1: Process of CRISPR

Ethical issues

CRISPR is a very powerful tool that needs a lot of contemplation about its consequences one tiny mistake and this could lead to a catastrophe. As the technology progresses and gets more refined, more and more people will use it. But despite of revolution CRISPR/Cas9 now is for science, it is still just a first generation tool having a great potential to revolutionize the agriculture sector and all other field of biological sciences.

References:

Kaoutar El-Mounadi , María Luisa Morales-Floriano and Hernan Garcia-Ruiz.2020. Principles, Applications, and Biosafety of Plant Genome Editing Using CRISPR-Cas9. Front. Plant Sci. doi: 10.3389/fpls.2020.00056

Pawan Kumar
Lecturer
Govt. Girls Sen. Sec. School,
Ferozepur Jhirka
Nuh, Haryana

Kusum Malik
Lecturer
Govt. Girls Sen. Sec. School,
Ferozepur Jhirka
Nuh, Haryana

Let's Invest in Our Planet

Babita Yadav

Our Earth is the only planet where water - the elixir of life, exists making it fit for the survival of all organisms including the most intelligent animal, that is, man. It does not belong to humans rather humans belong to it.

Earth is also a living being and all plants and animals are a part of it. Thomas Moore has rightly quoted, "Earth is not a platform for human life. It's a living being. We are not on it but part of it. It's health is our health".

The health of our Earth is deteriorating due to urbanization and modernization. The rapidly growing world population has led to a greater demand for basic resources thereby putting unprecedented pressure on natural resources. This in turn has led to water, soil and air pollution. Deforestation on a large scale is adding fuel to the fire. Increased emissions of greenhouse gases is causing a negative impact on our Earth's climate, ecosystems and biodiversity. Biodiversity and ecosystems functioning provides goods and services like clean air, fresh water, food security and climatic stabilization which are essential for human health. Loss of biodiversity and deforestation threaten water security and melting of glaciers due to global warming result in rise in sea level. Rising sea levels can lead to salination of coastal fresh water sources. Deforestation is decreasing the

forest cover leading to droughts. Need has arisen to act quickly to protect the planet's ecological and climatic systems. Every citizen consumer, industry, community member and government can invest in our planet earth by creating a sustainable green economy.

As a conscious citizen and consumer, one can adopt the strategy of reducing the use and reusing the non-renewable resources, making judicious use of water and power and opting for bio-degradable products in place of non-biodegradable products like plastics in day-to day life.

As a producer, one can adopt the organic mode of farming by promoting the use of organic manure instead of overusing artificial fertilizers and harmful pesticides. This will improve the soil quality and control soil pollution.

Industries should also work for proper treatment and disposal of industrial wastes and emissions so that air, soil and water does not get polluted.

As community members, local awareness campaigns, cleanliness drives and tree-plantation drives can be initiated by individuals to highlight the importance of health and hygiene.

The governments of all the countries have an important part to play in investing in our planet. Several world organisations hold summits from time to time to ponder over the issues of climate change, global warming and promote sustainable development programmes.

Our government is no less in this regard. The government of India has launched the Pradhan Mantri Kisan Urja Suraksha evam Utthan Mahabhiyaan (PM KUSUM) scheme for farmers to remove their dependence on diesel and kerosene and link pump sets to eco-friendly solar energy. It has also decided to promote the use of electric and CNG run vehicles and restrict the entry of 10 year old diesel run vehicles and 15 year old petrol run vehicles in the NCR to cut down carbon emissions, which is a very good step in controlling environmental pollution.

To make the nation less dependent on groundwater and conserve and manage rainwater, "Jal shakti Abhiyaan : Catch the Rain" programme has been launched by honourable Prime Minister Shri Narender Modi. Similarly various schemes like Green India Mission, National Afforestation Programme, National Coastal Management Programme and National Mission on Himalayan Studies under the climate change programme, work for conservation of environment and sustainable development of various ecosystems.

Every individual and every nation should work for making our planet healthy and a beautiful place to live on. Let's take a vow to make a judicious use of the natural resources so that we may not leave a scorched planet for the future generations as said by Mr Lester Brown, "We have not inherited this earth from our forefathers; we have borrowed it from our children."

PGT English
Govt. Sr. Sec. School Rewari,
Haryana

Why Learn Algebra

Narita

After all, all of the math leading up to algebra that we learned growing up such as addition, multiplication, decimal, fractions and the like, seem to have a concrete meaning. These concepts all deal with numbers in some way or another and because of this we can wrap our brains more easily around the concepts. After all, I can pick up six pencils and give two to a friend and by using math I can figure out how many pencils I am left holding in my hand. We can all imagine situations where basic math serves us well – calculating your change in the grocery store for instance.

In short, basic math deals with numbers. Since we are all taught how to count at a young age the concepts of basic math, even though challenging at first, seem to have a practical value – even to children. At the very beginning you are asked to learn certain rules on how to calculate things in algebra. And so the thoughts begin; "Why do I need to learn this?" "When would I ever use Algebra in real life? "What you have to remember, though is that basic math is riddled with special rules and symbols as well. For example, the symbols "+" and "=" were at one time foreign to us all. In addition the concept of adding fractions, as a single example, is filled with special rules that we must learn. When adding 1/3 to 1/3, for example, you keep the common denominator and add the numerators, so that 1/3+1/3=2/3. The point here is that when you begin to learn algebra it may seem overwhelming with the rules that you must learn, but this is no different from the multitude of rules that you had to learn that dealt with basic math such as addition and subtraction.

Learning Algebra is achievable for all, you just need to take things one step at a time and learn the basic rules before moving on to more advanced topics. But this does not answer the question of "Why should I learn Algebra?" This is a difficult question, but the simplest answer is that Algebra is the beginning of a journey that gives you the skills to solve more complex problems.

What types of problems can you

solve using the skills you learned in Algebra? I suggest you to take a journey with me back to your childhood. We've all been to the playground and had a great time on the see-saw and the slide. Algebra can help you understand them. The physics of all of these playground toys can be completely understood using only Algebra. No Calculus required. For example, if you knew the weight of a person at the top of the slide and you knew height of the slide you could roughly calculate how fast you would be travelling as you exited the bottom of the slide. On the see-saw, let's say that a person was sitting at one end and you knew that person's weight. You'd like to sit on the other side of the see-saw, but not at the very end – you'd like to sit opposite your partner in the middle between the seat and the pivot point. Using algebra, you could calculate how heavy you'd have to be to exactly balance the see-saw.

Now, you might be thinking. "I never learned how to calculate things such as this in my algebra class!" This is in fact true. All of the applications we have been talking about here are known as the study of Physics. If you had to boil the word Physics down to one sentence it would be. "Physics is all about studying the world around us using math as a tool."

Simply put all the math that you ever learn is really a tool for understanding the world around us. Algebra is a stepping stone to learning about this wonderful universe that we live in. With it you have the tools to understand a great many things and you also have the skills needed to continue on and learn Trigonometry and Calculus which are essential for exploring other types of problems and phenomena around us. So, try not to think of Algebra as a boring list of rules and procedures to memorize. Consider algebra as a gateway to exploring the world around us all.

PGT Maths
GMSSSS Garhi Bolni Rewari,
Haryana

Where to Go, What to Choose?

You start in kindergarten
Then you move on and on
You try to achieve your goal
And you try to follow a dream
Is it easy to choose, is it easy to chase?
What should you do?
And how should you do?
Just follow a trick and few steps
Never be late in thinking
And do it before your time lapses
Target your dream and target your goal
Draw a backward path to plan
Know your interests and assess your aptitude
Make a note and create a chart
No career is bad, and no target is small
Know yourself and your stream
After all it is all about you and your dream

- Alka Akhil Kumar

Our Best Companion

Dr. Himanshu Garg

A person's inner circle usually includes close family members and friends who are thought of as family. We interact with a number of persons around us in our daily life. At our workplace or at home, we deal with so many persons. But very few of them are very close to our heart. Do you know why? Because we trust them. We share our happiness, sorrow and personal feelings with those persons in our daily routine. In revert, those people also care for us. This is the natural behaviour of not only of human beings but also of the Almighty. Your companions can be from one of the two following categories. They will either be Good individuals - who guide and encourage you towards good actions, or they are going to be bad - encouraging you to do wrong or bad actions and that which misleads you. So we must take care to select our companies. Our company affects our behaviour, our capabilities and also our efficiency. It also directs our life accordingly. Our good companions are parents and teachers in this world but it is not sure that they become our companions throughout our life. Because they are ordinary human beings and they have to follow the rule of nature. So our best companion is God who can guide us in each and every situation. His existence always directs us towards the right path. The closer you are to Him, the higher you can achieve.

Once a boy asked the father- What's the size of God? Then the father looked up to the sky and seeing an airplane asked the son: What's the size of that airplane? The boy answered: It's very small. I can barely see it. So the father took him to the airport and as they approached an airplane he asked: And now, what is the size of the aeroplane? The boy answered: Wow Papa, this is huge! Then the father told him: God, is like this, His size depends on the distance between you and Him.

The closer you are to Him, the greater He will be in your life!

Asstt. Professor(CS)
Govt. College for Women,Jind
Himanshujind@yahoo.com

Articles Through Poem

'A', 'An' and ' The ' are called articles
They are grammar's basic particles
'A' is used before a consonant sound
As a chair, a pen and a pound

'An' is used before a vowel sound
As an apple, an egg or an orange round
'The 'is used before specific things
As the sun, the moon and the great kings

We use 'no articles' before material noun
As …gold,…wood …cotton and …brown
We use 'no articles 'before abstract
As ..love, ..honesty,…calm and ..comfort

We use 'a 'or 'an' before only singular
As an editor, a boy or a computer
We use 'the' before one or more than one
As The Ganga, the boys and the pun

Surender Kumar Sharma
PGT English
GMSSSS Kairu Bhiwani Haryana

The Novel Corona and its Impact on Our Education System

Dinesh kumar

No one would have ever thought that a virus-like Covid-19 would come all of sudden and change the lifestyle of people. The endeavours of every developed country in terms of health system resulted in complete failure. Due to Covid-19, many changes came to our lives. It took some time for everyone to adopt the new way of living with some restrictions. The Covid-19 impact was felt everywhere, which resulted in the closure of Schools and other educational institutions. It is said that an investment in education pays the best interest. As education a basic right of an individual is in a pitiable form in our country India.

In the beginning, most of the state governments decided to close the schools transiently to reduce the impact of Covid-19. Later these were reopened for some classes, which increased the number of infection rates and then closed again. The fact is that the corona virus outbreak created havoc in the lives of students because the pandemic shifted the whole education system online. Schools where phones were never allowed now had classes entirely transacted online. In this online mode students' overall development was badly affected. It lacked social and challenging environment, engagement, communication, group work, value education, play and relaxation time spent with peers. They were learning and growing earlier during the pre covid-19 period through the cycle of fun, play, art, music, sports, knowledge and competitions.

Technology paved the way for education, thus helping the students and teachers to connect virtually through online classrooms, webinars, digital exams, and so on. Though schools were closed, students were attending their classes through various modes of online classes. It was a good initiative but I think it didn't help much. There were lots of students who didn't own the resources to attend the online classes suffered a lot. Availability of electricity supply and internet accessibility was also a challenge for the students living in the rural areas. Teachers created Whatsapp groups and added students to interact with them but it led to some unforeseen problems. Some cases of creating parallel groups by the students came up. Sometimes they shared videos and GIFs that were taboo and unacceptable in the society. The digital teaching was new to some teachers. Some employed in private schools, started looking for alternate jobs either they were not given salary or could not cope up with the teaching through technology.

There are students in India who come to school just because they can get food. The great midday meal scheme helped many children who couldn't bring their food from their homes to get their nutrition. Because of the closure of the schools, many students were deprived of enough food for their survival. Most of the school-going children were involved in child labour to support their families. I personally saw some students selling vegetables and fruits in the streets.

There was always a delay, postponement or cancellation of

many regular examinations including entrance exams, which led to confusion and dilemma for many students and there was no room for curriculum. The schools where phones were not allowed now have classes entirely transacted online.

This transition also led to a variety of mental health issues among students like depression, anxiety and stress.

We cannot deny the fact that the Government of Haryana and institutions have been working to reform the existing education model. There are still several issues that are required to be taken care of.

We should discourage rote learning at all levels in our schools. They should rather be encouraged to learn the concepts of the topics. In order to achieve this objective, digital boards can help a lot.

The pressure of scoring good marks often makes students underperform. The focus of evaluation should be classroom participation by the students, projects, communication, leadership skills and extra-curricular activities.

Students should be guided to pursue the subjects that they feel comfortable in learning.

The schools should create a congenial and home-like atmosphere where students can develop sympathy, love and compassion in the classroom. These will be reflected in their general behavior while interacting with the people outside the classroom.

Students must be trained on latest technological gadgets from the early years of their education so that it should not become a barrier during with later times. As it happened in the case of recent spread of pandemic.

Some students have faster learning pace and some are slow in learning. We as teachers keenly observe and deal with each and every student with cautions.

Lastly, I would like to aver that the students must be taught about the morals of life and humanistic values simultaneously. They should be taught that life is much beyond money and success is not measured in money.

Lecturer in English
GSSS, Bhudpur (Rewari)

I'm a Teacher and I know my students

Nirmal Gulia

'Educator, Tutor, Instructor, Pedagogue, Facilitator, Master, Guru—Whatever we call, a teacher for his students is everything---a helper, a guide, a pathfinder ---a trustworthy friend.

"THANK YOU!"

"What a teacher writes on the blackboard of life can never be erased."

While writing this how can I forget to express the feelings and excitement of that little kid who is very thrilled on his **'FIRST DAY OF SCHOOL'.**

New shoes, new bag
My uniform is new
New books, new class,
A new class-teacher too!

DREAM OF THE LITTLE KID, HIS ASPIRATIONS

WELCOME OF STUDENTS

Confession of a teacher:

As a teacher, I try my best to grow and learn. I read books about different areas of education, I attend school and district professional development trainings, and try to collaborate with my colleagues to grow my practice but I have a confession to make:

"I DON'T LEARN NEARLY AS MUCH ABOUT TEACHING AND LEARNING AS I DO FROM MY STUDENTS SITTING AT THEIR DESKS IN MY CLASSROOM."

I feel and think, the most important thing teachers need to know is how important to get to know their students. **THE MORE THEY GET TO KNOW EACH STUDENT ,THE BETTER THEY CAN TEACH THEM IN A WAY THAT THEY WILL LEARN.** This is exactly the point and this is a must. Foremost requirements of a teacher is to know the background of his learners, their aptitude, attitude , their strengths and weaknesses as teachers themselves realize that their learners have been their great teachers helping them in preparing strategies, tactics, skills to their need and levels in various contexts. Indeed making them great human beings. It is very important to know and understand the interests of the learners, their habits, hobbies and needs so that a teacher could treat them with considerate concern.

WAYS TO KNOW THE STUDENTS

I just wish to point out the two important responses which I always prefer to whenever I avail myself of this opportunity.

TALK TO THEM

PLAY WITH THEM

When I say 'Talk to your students' I really mean it. Have a conversation with them on a regular basis, about what interests them outside the world of academics. It's necessary aspect to know about their likes, dislikes, friends, surroundings so that they may be treated accordingly with concern and consideration.

'Playing games 'with the students in the classroom or on the ground, is not merely a game, it will be fun. The students wish their teachers to have fun with them. They wish their teacher is exactly like them, as their friend .

LIGHTEN UP.

EACH TEACHER REALIZES THE DIGNITY OF HIS CALLING.

How important it is for the teacher to know their students as learners and as teachers. Teachers who know how their students learn, can guide them and grow in their learning. Teachers who know their students as unique individuals can help them to navigate the often confusing and anxiety filled lives that they lead.

CONSIDER YOUR STUDENTS TO BE YOUR MOST IMPORTANT TEACHERS, ALWAYS THERE TO ENHANCE YOU.

Lecturer in English
DIET Machhrauli , Jhajjar

Harbans Puzzle

Sunil Bajaj

One of the important goals of the professional development for mathematics teachers is to emphasize the goal of developing an understanding of how students think (Sowder, 2007).

Enhancing thinking skills among students requires thinking a good strategy to acquire those skills. Instead of focusing on rote teaching of information and facts there is a need for attention to divergent and higher cognitive questions. This type of questions have the characteristic of providing great freedom for the students to search for solutions. It allows using many processes to answer these questions, which provokes a divergent thinking that starts from a problem offering alternatives to solve the problem and leads to a variety of different solutions that enhance teaching and curriculum. Puzzles are one of them.

The puzzle or riddle are known things since ancient times in India and the world, and people were competing to put those riddles and puzzles together, and they devoted considerable material rewards to people who can solve some riddles and puzzles.

Most of the Puzzles present a perplexing task that is not easily solved. At the same time they are designed to be fun and engaging, so that the puzzle solver will work to figure out the solution. In maths, students often give up on challenging problems that they would be able to solve with some effort. Puzzles that are not focused on maths can be an engaging way to develop persistence.

Mathematical puzzles can engage students in rich mathematical explorations and logical reasoning in the classroom (Evered, 2001). Students generally did not engage in the process of mathematical thinking unless they are directed to do so.

This is the Harbans Puzzle developed by taking Ideas from the Kenken puzzle developed by a Japanese teacher. It will be interesting and fun for teachers, parents and students.

How can we play?

Take a grid 3X3 or 4X4 or 5X5 …….

In beginning, let us take a grid 3X3 .Our target will be to fill in the whole grid with numbers, making sure no number is repeated in any row or column. In this grid 3X3we will use three numbers 0, 1, 2 only

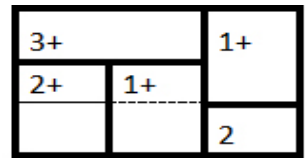

Type1

» In a 3X3 puzzle, use the numbers 0, 1, 2

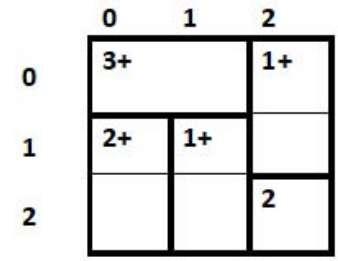

» In a 4X4 puzzle, you may use the numbers e.g., 0,1,2,3

» In a 5X5, use the numbers0-4 and so on.

The heavily- outlined area is called "group box"

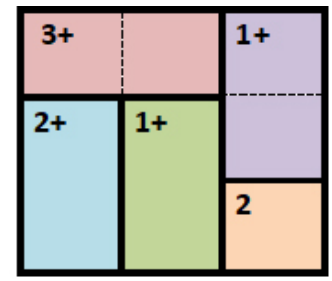

The top left corner of each group box has "large numbers" and one math

operation. The numbers you enter into a group box must combine (in any order) to produce the target number using the math operation eg(+,-,X or ÷).

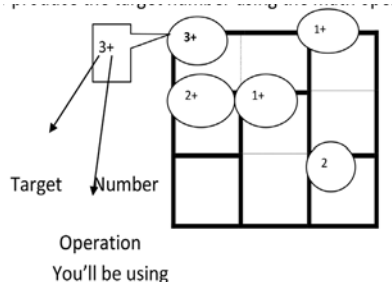

In this group box, the math operation to use is addition, and the numbers must add up to 3.Since this group box has 2 squares, the only possibilities are 1 and 2, in either order (2+1 or 1+2= 2).A group box with one square is named a " single box"… just fill in the number you're given.

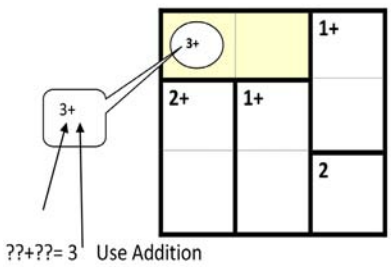

A number cannot be repeated within the same row or column.

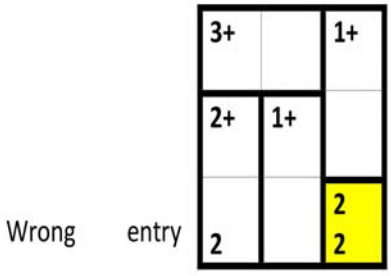

In a 3X3 puzzle, you may use the numbers eg 0-2

In a 4X4 puzzle, you may use the numbers eg 0-3

In a 5X5, use the numbers 0-4 and so on.

LET'S Start

1. Enter a 2 in the Single box. It's always best to begin with your singles.

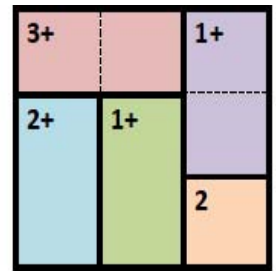

2. The lower-left group box must be filled in with a 2 and a 0 in order to equal 2. The 2 must go in the top square since the bottom row already has a 2 in it. That means a 0 must go in the square below the 2.

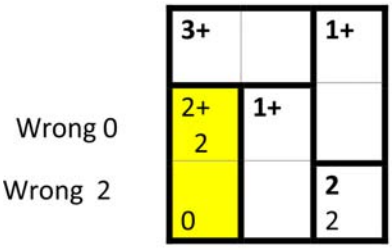

3. Each row and column must have a 0, 1 and 2 in it. The bottom row already has a 0 and a 2, so a 1 is the only choice in the middle square. The same logic can be used for the left most column the only choice is 1.

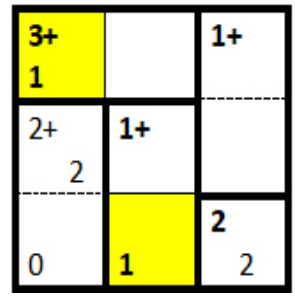

4. Enter 2 in the top middle square (in first row) so that the 3+ group box at the top totals 3 using addition. Then, enter a 0 in the center square so that the middle column has all 3 numbers, and because 1+0=1, satisfying the bottom middle cage.

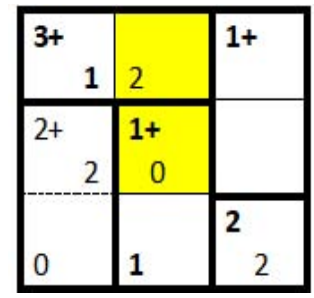

5. You can now put a 0 in the top right square and a 1 below it because they are the only unused digits in their rows…… AND because 0+1=1

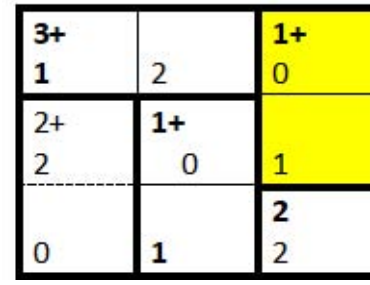

satisfying the top right group box. You're now ready to play Harban's puzzle.

Type-2 (Extension)

To extend it, we may use any set of numbers. Total numbers used will be according to grid. It will help children in learning more types of numbers and operations on them, we may extend it as mentioned below with one more example.

In a 3X3 puzzle, you may use the numbers e.g. 0-2, 1-3 or 10, 20, 30 or integers, prime numbers, even or odd numbers etc. In a 4X4 puzzle, you may use the numbers e.g. 0-3 ,1-4 or 10 ,20, 30, 40In a 5X5, use the numbers any consecutive 5 numbers 0-4 or 1-5, or 10 ,20, 30, 40,50 and so on and use operations +, -, x , ÷

LET'S Start

In this 3X3 puzzle, we will use the numbers 10, 20, 30 and operations used addition and subtraction

1. Enter a 30 in the Single Square. It's always best to begin with your singles.

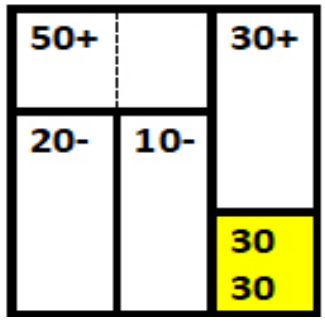

2. The lower-left group box must be filled in with a 10 and a 30 in order to get difference equal 20. The 30 must go in the top square since the bottom row already has a 30 in it. That means a 10 must go in the square below the 30.

Wrong10

Wrong 30

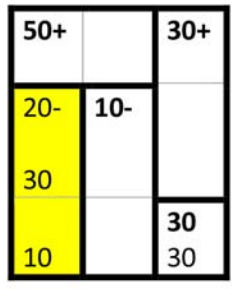

3. Each row and column must have a 10, 20 and 30 in it. The bottom row already has a 10 and a 30, so a 20 belongs in the middle square. The same logic can be used for the left most column.

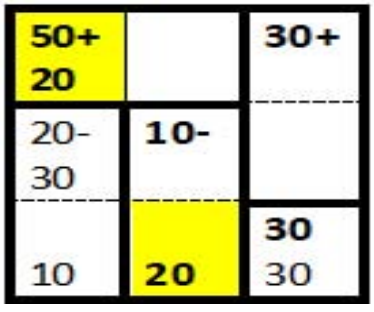

4. Enter 30 in the top middle square so that the 50+ group box at the top totals 50 using addition. Then, enter a 10 in the center square so that the middle column has all 3 numbers, and because 20-10=10, satisfying the bottom middle group box.

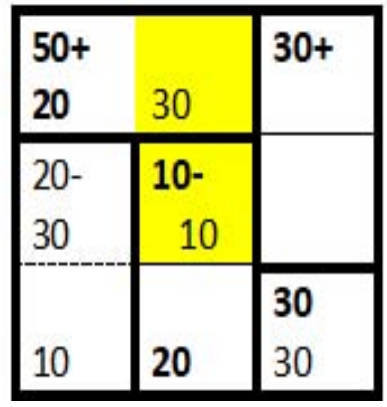

5. You can now put a 10 in the top right square and a 20 below it because they are the only unused numbers in their rows…… AND because 10+20=30 satisfying the top right group box. You're now ready to play complex Harban's puzzle .

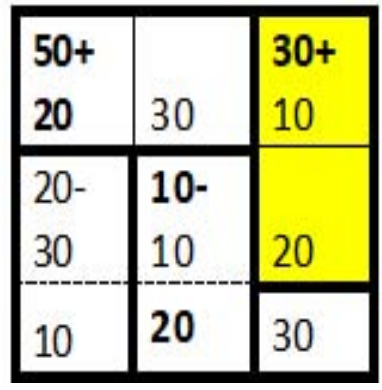

Level 2 Use three consecutive numbers 1 to 5 (think of the numbers used)

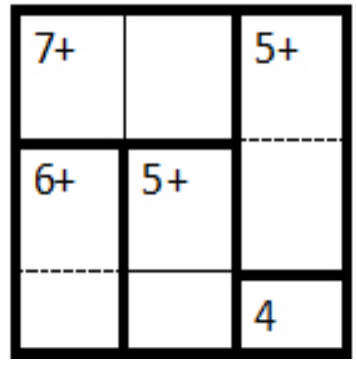

Level 3 (think of the numbers used) Use (3 Prime Numbers 1 to 10)

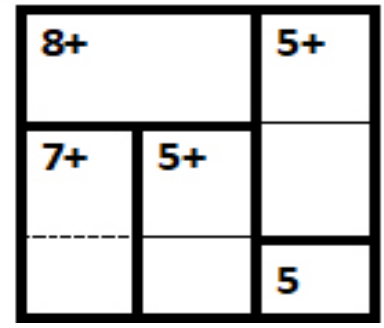

Level 4 (think of the numbers used)Use (3 consecutive Integers -5 to 5)

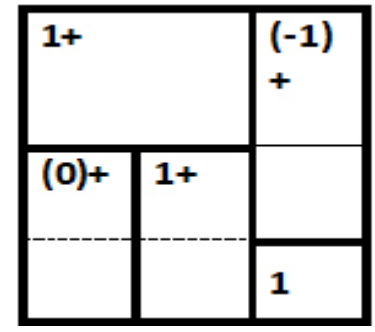

Level 5 Use (3 Fractions as 1/1, 1/2, 1/3)

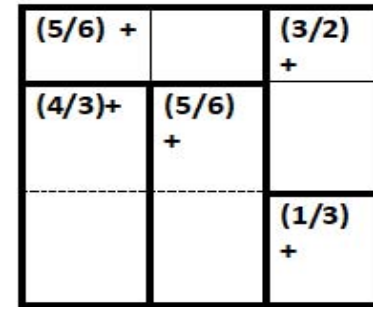

What is common in all the examples discussed above? If you know then you have learnt the Harbans Puzzle.

How many solutions are possible? How many puzzles can you make with the solutions?

Dy. Director
SCERT Haryana Gurugram

Amazing Facts

1. **The word Popcorn is derived from the middle English word "poppe," which means "explosive sound".**
2. The tallest freestanding sculpture in the world is Chief Crazy Horse in South Dakota, USA .
3. Marie Curie, the Nobel prize winning scientist who discovered radium, died of radiation poisoning.
4. 898 tornadoes were recorded to have occurred in the United States in the year 2000.
5. The food that is digested in your stomach is called "chyme."
6. The word housekeeping was invented by Shakespeare .
7. In the great fire of London in 1666 half of London was burnt down but only 6 people were injured.
8. Lack of sleep can affect your immune system and reduce your ability to fight infections.
9. All dogs are the descendant of the wolf. These wolves lived in eastern Asia about 15,000 years ago.
10. It is not possible to tickle yourself. The cerebellum, a part of the brain, warns the rest of the brain that you are about to tickle yourself. Since your brain knows this, it ignores the resulting sensation.
11. With winds of 50 miles per hour, The Statue of Liberty sways three inches and the torch sways five inches.
12. Police detectives have used snapping turtles to help them locate dead bodies.
13. In most advertisements, including newspapers, the time displayed on a watch is 10:10.
14. The national sport of Japan is sumo wrestling.
15. The early occurrence of a fetus yawning is at eleven weeks after conception.
16. In a month, a fingernail grows an eighth of an inch.
17. Edward VIII did not officially become the King of England as he abdicated the throne to marry an American divorcee.
18. The reason why golf balls have dimples on them is because it helps in the ball to move a farther distance by reducing drag.
19. Americans consume the most peanut butter in the world.
20. To make butter more attractive in colour, carrot juice was used by people in the Middle Ages.
21. Early hockey games allowed as many as 30 players a side on the ice.
22. Most fleas do not live past a year old.
23. It takes seven to ten days to make a jelly belly jellybean.
24. Some asteroids have other asteroids orbiting them.
25. Maine is the only state whose name is just one syllable.
26. There is enough concrete in the Hoover Dam to pave a two lane highway from San Francisco to New York.
27. Every 238 years, the orbits of Neptune and Pluto change making Neptune at times the farthest planet from the sun.
28. There is a certain species of kangaroo that is only 2.5 centimetres long when it is born.
29. In a lifetime, the average house cat spends approximately 10,950 hours purring.
30. The real name of Toto the dog in "The Wizard Of Oz" was Terry.

https://greatfacts.com/

1. The character Shylock appears in which Shakespeare play? **The Merchant of Venice**
2. Who released an album in 1999 called Brand New Day? **Sting**
3. If a creature is edentulous what has it not got? **Teeth**
4. What were the eldest sons of the Kings of France called? **Dauphin**
5. What is the fourth sign of the Zodiac? **Cancer**
6. How many years of marriage is celebrated on the Ivory anniversary? **Fourteenth**
7. P&O, the shipping line, stands for what? **Peninsular and Oriental**
8. What was Radar's surname in MASH? **O'Reilly**
9. Excluding Australia and continental land masses what is the largest island in the world? **Greenland**
11. In which year (or decade) were parking meters introduced in the UK? **1958**
12. Who wrote the novel Dracula? **Bram Stoker**
13. What is a baby seal called? **Pup**
14. What is the Shaftesbury Memorial Fountain more popularly known as? **Eros**
15. What is the name of Don Quixote's horse? **Rosinante**
16. Which actresses play Rosemary and Thyme in the TV series about two gardening sleuths? **Felicity Kendal and Pam Ferris**
17. During which war was the Battle of Marne? **First World War**
18. In the human body what is Varicella commonly known as? **Chicken Pox**
19. How many valves does a trumpet have? **Three**
20. Brock is a nickname for which animal? **Badger**
21. Who is the Roman Goddess of the hunt? **Diana**
22. What type of creature is an alewife? **Fish**
23. What is the metal or plastic end of a shoelace called? **Aglet**
24. What is the world's third largest desert? **Gobi**
25. What was Lancelot Brown famous for designing? **Gardens**
26. Which artist was born in Bradford in 1937? **David Hockney**
27. What was the BBC's first TV pop music programme? **Six-Five Special**
28. Which English city had the Roman name Camulodonum? **Colchester**
29. What is the main vegetable ingredient in the dish Borsht? **Beetroot**
30. With which country did the UK have the long-running 'Cod War' disputes over fishing rights? **Iceland**
31. Who was given the name 'Fourth Man' when he was revealed as a spy in 1979? **Anthony Blunt**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-113-general-knowledge/

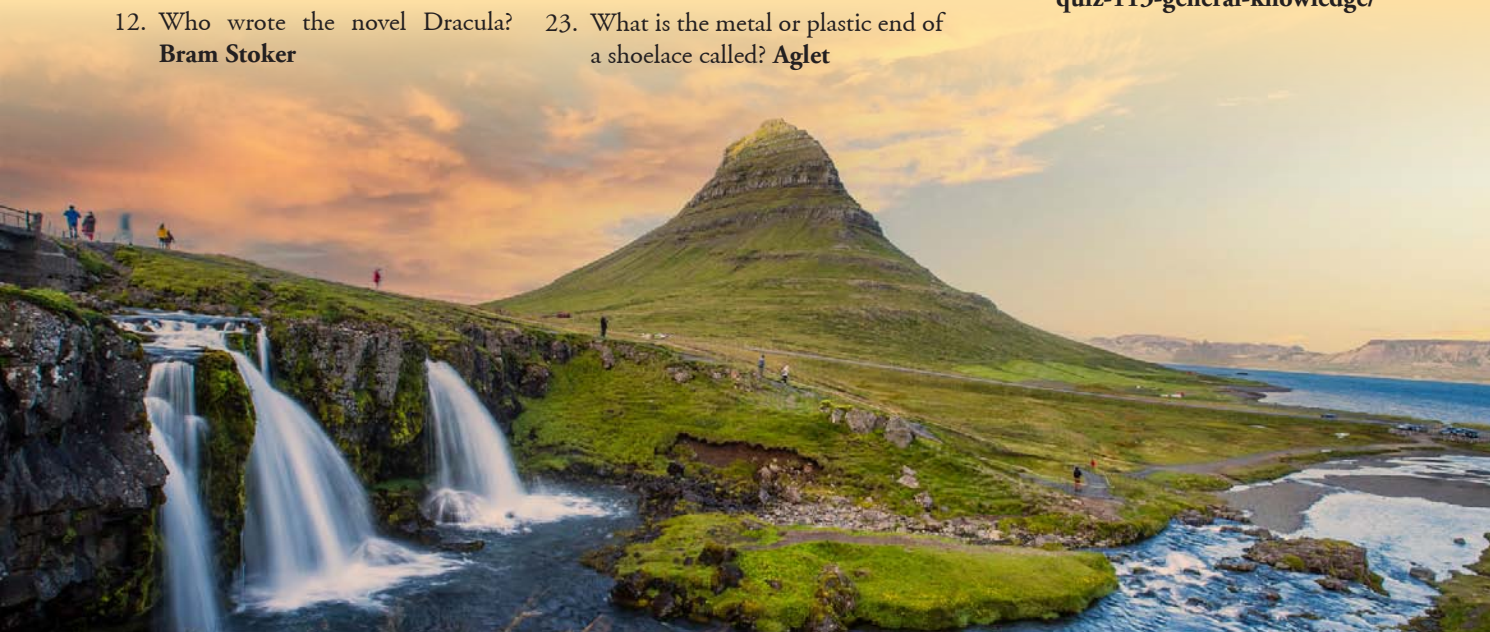

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का बहुप्रतीक्षित अप्रैल माह का अंक पढ़कर मेरा मन बल्लियों उछलने लगा, मानो सागर में ज्वार आ गया हो। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि बेटियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए समर्पित यह अंक निस्संदेह प्रशंसनीय है। सम्पादक महोदय की पूरी टीम हर एक अंक में कुछ नया करने को आतुर रहती है। इसके लिए आपको हार्दिक बधाई। इस अंक में प्रत्येक लेख गागर में सागर भरने के समान है। डॉ. महावीर सिंह के शब्द- 'हार तब होती है जब मान लिया जाता है और जीत तब होती है जब ठान लिया जाता है' पाठकों के मन में नई ऊर्जा भर रहे हैं। डॉ. जे. गणेशन एवं डॉ. प्रदीप राठौर के उद्गार भी प्रेरणादायक हैं। सुमन मलिक का लेख 'लड़की हूँ लड़ सकती हूँ' भी एक नई दिशा प्रदान करने वाला है। रेखा मित्तल से लेकर अरुण कैहरबा तक सभी लेखकों की लेखनी में एक कशिश देखने को मिलती है। मिश्रा जी ने भी राजाखेड़ी स्कूल की महिमा को बहुत खूबसूरती के साथ अंकित किया है। इसी क्रम में सुनील ने भी अशोक वशिष्ठ की खूबियों का एक अध्यापक के रूप में बहुत शानदार वर्णन किया है। निःसंदेह ऐसे कर्मठ अध्यापक देश की अमूल्य धरोहर हैं। अंग्रेजी भाषा के लेख भी रुचिकर हैं। आप भविष्य में भी 'शिक्षा सारथी' की विषय-विविधता को यूँ ही बनाए रखें। एक सुनहरे अंक को पाठकों तक पहुँचाने के लिए आपको पुनः साधुवाद।

पवन कुमार स्वामी
जेबीटी अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय
चुंगी नम्बर- 7 लोहारू, जिला भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय

सादर नमन

'शिक्षा सारथी' का अप्रैल अंक साभार प्राप्त हुआ। संपादकीय में लड़कियों को आत्मरक्षा हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता विषय सार्थक और समीचीन चिंतन प्रदान किया गया है। विद्यालय और शिक्षा-संस्थानों में इसकी नितांत आवश्यकता है और इसका प्रशिक्षण देना अनिवार्य किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के संदर्भ में प्रस्तुत सभी आलेख एवं कविताएँ बच्चों में आशा और आत्मविश्वास जगाते हैं। लड़की हूँ लड़ सकती हूँ, खेल-खेल में विज्ञान, अशोक वशिष्ठ, होनहार मनमोहक शीर्षकों में दी गई जानकारी मन में सकारात्मकता और नव प्रेरणा जगाती है। हर्ष का विषय है कि पत्रिका में बाल सारथी पृष्ठों में बाल रचनाओं को स्थान दिया जा रहा है, जो अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्द्धक हैं। पत्रिका में जो भी विषय-वस्तु प्रदान की गई है, वह समय की माँग के अनुकूल, सटीक और सार्थक है। इसमें दिए गए लेख और कविताएँ मनोरंजन और ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हैं। शिक्षार्थियों को सन्मार्ग पर ले जाने वाले 'शिक्षा सारथी' अभियान की सतत सफलता हेतु मंगल कामनाएँ। सादर।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ- 226022

Hi, I thoroughly impressed by you when I got a copy of Shikshasaarthi and got a chance to read your article and poem published in. Dear Editor all the best for your all upcoming articles.

Nidhi Thapa, Panchkula.

Mam I read your poem" Pieces of Sleep". It is very amazing . After this I forgot my stress and anxiety.

Rohit Bahartiya, Sonipat.

27 अप्रैल, 2022 को पंचकूला में आयोजित 'रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम' के राज्य स्तरीय समारोह में 'शिक्षा सारथी' के आत्मरक्षा प्रशिक्षण विशेषांक (अप्रैल-2022) का विमोचन करते हुए शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल, विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, माध्यमिक शिक्षा विभाग के महानिदेशक डॉ.जे.गणेशन, अतिरिक्त निदेशक श्री विवेक कालिया व अन्य

'शिक्षा सारथी' के अप्रैल-2022 अंक में करनाल जिले के राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ब्याना की 14 लड़कियों के आत्मरक्षा के बारे में विचार प्रकाशित हुए थे। इन सभी छात्राओं की विभाग द्वारा प्रेषित पत्रिकाएँ जब डाक द्वारा विद्यालय में पहुँचीं तो वहाँ उत्सव-सा माहौल बन गया। एक छोटे समारोह में करतल ध्वनियों के बीच प्रधानाचार्य व अनेक स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में छात्राओं को पत्रिकाएँ वितरित की गईं। चित्र सहित अपने-अपने विचारों को प्रकाशित देखकर छात्राओं की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा।

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

आज़ादी का अमृत-उत्सव

आज़ादी का अमृत-उत्सव, आओ चलो मनाएँ हम।
वीर शहीदों की गाथाएँ, जन-जन तक पहुँचाएँ हम।।

हँसते-हँसते जिन वीरों ने, तन-मन-धन बलिदान दिए।
आज़ादी पाने की खातिर, प्राणों तक कुर्बान किए।

आओ ऐसे सब वीरों को, मिलकर शीश नवाएँ हम।
आज़ादी का अमृत-उत्सव, आओ चलो मनाएँ हम।।

आज़ादी की अलख जगाई, रचा नया इतिहास सुनो।
तोड़ गुलामी की जंजीरें, जीता जन-विश्वास सुनो।।

भारत-माँ के उन वीरों को, आओ मिलकर ध्याएँ हम।
आज़ादी का अमृत-उत्सव आओ चलो मनाएँ हम।।

नये दौर में आओ लिक्खें, मिलकर हम नई कहानी।
वीर शहीदों के वे सपने, कभी न हों अब बेमानी।

खुली आँख जो सपने देखे, पूरे कर दिखलाएँ हम।
आज़ादी का अमृत-उत्सव आओ चलो मनाएँ हम।

जाति-धर्म पर कभी भूलकर, हो ना कोई दंगा।
कल-कल कल-कल बहती जाए, हरदम पावन माँ गंगा।

सबसे ऊँचा रहे तिरंगा, आओ मिलकर फहराएँ।
आजादी का अमृत उत्सव आओ चलो मनाएँ।।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी
रेवाड़ी, हरियाणा